शजरह
चिश्तिया कादरिया अशरफ़िया
SUNNI CENTRE NAGPUR
Mahboobul Ulama Academy
शायकर्दा
महबूबुल उलमा एकेडमी नागपुर

International Sunni Center

Ethabahtta Chowk, Hazrat Nijamuddin Colony, Kalmna Ring Road, Nagpur, 26

Sunni Center Nagpur India

@@@ Objectives @@@

Sunni Center was Established With The Sacred Islamic Knowledge Among The Masses But Also of Working Towards The Socio-Economic Uplift Ment of The Umrah.

With The Objectives, Sunni Center Has Organized Various Medical Camp, Providing Free Medical Services to The People of Poor Background. It Also Provides Free of the Cost Ambulance Services for Funeral Rites of Deceased.

Sunni Center Also Engages in The Educational Welfare of The Ummah by Providing Tuition Free & Other Expenses to Students Who Could Not Otherwise Support Their Education Once The Construction of This Buildings Completed & its Office is Properly Established, Sunni Center Aims to Expend Its Scope and Activities For Helping The Poor & Needy Ones.

@@@ Objectives @@@

Mahboobul Ulama Academy Nagpur

Account Number State Bank of India

31268791268

IFSC Code SBIN 0001305

SUNNI CENTRE NAGPUR

Mahboobul Ulama Academy

शजरए

क़ादरिया

चिश्तिया

अशरफ़िया

पीरे तरीकत

मुजाहिदे इस्लाम हज़रत अल्लामा मौलाना

अल्हाज अश्शाह

सैय्यद आलमगीर अशरफ़

अशरफी उल जीलानी

जानशीने हुजूर महबूबूल उलमा

किछौछा शरीफ, अम्बेडकर नगर (उ.प्र.)

-0- **चेयरमेन** -0-

इन्टरनेशनल सुन्नी सेंटर व महबुबूल उल्मा एकेडमी,

ईटा भट्ठा चौक, हज़रत निज़ामुद्दीन कॉलोनी,

कलमना रिंग रोड, नागपुर 26

--0--0--0--

हदिया 30 रू.

शायाकर्दा

इन्टरनेशनल सुन्नी सेंटर व महबुबूल उल्मा एकेडमी

प्रिंटर्स : किंग प्रिंटर्स

एचएमटी चौक, हांडीपारा, रायपुर (छ.ग.)

7000047722, 9827987424

मनक़बत

ब-हुजूर मख़्दूम सुल्तान सैय्यद अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी कुद्दि-स-सिर्रूहु

जहाँ में है बड़ा शोहरा विलायत हो तो ऐसी हो।
मिलाया हक़ से लाखों को हिदायत हो तो ऐसी है।
शहे सिमनाँ थे पहले फिर हुए कौनेन के सरवर।
हिदायत हो तो ऐसी हो निहायत हो तो ऐसी हो।।
जहाँ जिसने मदद चाही वहीं मुश्किल हुई आसाँ।
गुलामों पर जो आक़ा की इनायत हो तो ऐसी हो।।
मुरीदों की क़यामत में रिहाई नारे दोज़ख़ से।
करेंगे अशरफ़े सिमनाँ हिमायत हो तो ऐसी हो।।
तुम्हारे हुस्न का क़िस्सा कोई उश्शाक़ से पूछे।
तड़प जाता है दिल सुनकर हिमायत हो तो ऐसी हो।।
शहे सिमनाँ की मिदहत से नवेदे मग़फ़िरत पाई।
सुख़न की अशरफ़ी ख़स्ता जो ग़ायत हो तो ऐसी हो।।

मनक़बत

ब-हुज़ूर महबुबूल ओलमा अलैहिर्रहमा

पिया है जिसने पैमाना मेरे महबूब अशरफ़ का
उसे कहते है मस्ताना मेरे महबूब अशरफ़ का
छलकता है जहां सागर मए हुब्बे शहे दीं का
वो मयखाना है मयखाना मेरे महबूब अशरफ़ का
हसीनों महज़बीनों को वो ख़ातिर में नहीं लाता
है जिसके दिल में काशाना मेरे महबूब अशरफ़ का
उसे फरज़ानगीं हासिल है दानाओं की महफिल में
बज़ाहिर है जो दिवाना मेरे महबूब अशरफ़ का
अताए अशरफ़ सिमनां अता करते है हम सबको
है अंदाज़े करीमाना मेरे महबूब अशरफ़ का
चराग़े मअरफत की लौं है या रूए मुनव्वर है
जिसे देखो है परवाना मेरे महबूब अशरफ़ का
उठाने लग गए है लोग ऊंगली हाल–ए–अख़्तर पर
हुआ है जब से दिवाना मेरे महबूब अशरफ़ का

मनक़बत

पीरे तरीकत हुजूर मुज़ाहिदे इस्लाम

शहे सिमनान की पहचान आलमगीर अशरफ़ हैं
यकीनन इस ज़मी की शान आलगीर अशरफ़ हैं

उठा कर देख लो तारिख के औराक़ कहते है
के ग़ौसे पाक की संतान आलमगीर अशरफ़ हैं

हज़ारों लाखों मिलकर भी दब सकते नहीं जिनको
वही उठते हुए तुफान आलमगीर अशरफ़ हैं

अकीदत से चलो दामन भरें उम्मीद का अपने
मेरे मख़्दूम का फ़ैजान आलमगीर अशरफ़ हैं

गुलामे अशरफ़ सिमनां हूँ मैं महशर का डर कैसा
शफाअत का मेरी सामान आलमगीर अशरफ़ हैं

जो टकराएगा इनसे वो यज़ीदी टूट जाएगा
वो अहलेबैत की चट्टान आलमगीर अशरफ़ हैं

हमारे रास्ते में आना तो कुछ सोच कर आना
हमारा दिल हमारी जान आलमगीर अशरफ़ हैं

अमीरों को यहाँ हमने गुलामी करते देखा है
हर एक धनवान के धनवान आलमगीर अशरफ़ हैं

विलायत की हसीं खूश्बू जहाँ से रोज़ उठती है
अली के घर के वो गुलदान आलमगीर अशरफ़ हैं

जो अहलेबैत के बाग़ी है ऐ अख़्तर ज़माने में
उन्हीं की मौत का फरमान आलमगीर अशरफ़ हैं

786 / 92

एक नज़र

हज़रत मख़्दूम सुल्तान

सैय्यद अशरफ जहाँगीर सिमनानी

रदिअल्लाहो तआला अन्ह की

सौ साला हयाते तैयबा पर

विलादत :- सन् 708 हि. शहर सिमनान जो ईरान के दारूस्सलतनत तेहरान से 240 किलोमीटर दूर मशहद हाईवे पर वाके है और आज भी ईरान का ज़रखेज़ सूबा है।

वालिदैन

वालिद :-सुल्तान सैय्यद इब्राहिम शाह सिमनानी

वालिदा :—सैय्यदा खदीजा जो हज़रत ख़्वाजा अहमद यसवी की औलाद थीं।

तकमीले उलूम मअकूलातो मन्कूलात :— सन् 722 हि. में 14 साल की उम्र में

तख़्त नशीनी :— हुकुमत नूर बख्शिया सिमनान पर जुलूस फरमाया। **सन् 723 हि.**

तर्के सल्तनत:— सन् 733 हि. कुल दस साल तख़्ते शाही पर जल्वा आरा रहे।

बैअतो खिलाफत:– सन् 735 हि. सिमनान से पण्डवा शरीफ बंगाल का फासला दो साल में तय फरमाया।

कयामे पण्डवा:– सन् 735 हि. ता सन् 741 हि. पीरो मुर्शिद हज़रत शाह अलाउल हक पण्डवी की खानकाह में कयाम फरमाया।

शिराजे हिन्द जौनपूर में पहली बार आमद:– सन् 742 हि. (तुगलक के दौरे हुकूमत में)

अरब व यूरोप व मुमालिके इस्लामिया की तवील सय्याहत:– सन् 743 हि. ता सन् 758 हि. मुसलसल 15 साल की बजा आवरी फरमाई इस दौरान मिस्र इराक, फिलिस्तीन, तुर्किस्तान, ईरान, जज़ीरतुल अरब और रोम वगैरह की सय्याहत फरमाई।

कयामे पण्डवा:– सन् 759 से सन् 763 हि. तक मुद्दते कयाम 4 साल।

जानशीन का इन्तिखाब:– सन् 764 हि. में हरमैन शरीफैन की ज़्यारत के बाद हज़रत अपनी खाला ज़ाद बहन से मुलाकात के लिये जीलान

तशरीफ ले गये और अपने भांजे हज़रत सैय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक को अपना नूरूलऐन व जानशीन बनाने के लिये फर्ज़न्दी में कुबूल करके हमराह लाये।

बिलादे इस्लामिया व शर्किया की दूसरी बार सय्याहत सन् 768 हि. में

मन्सबे गौसियत पर फाइज हुये सन् 770 हि.

महबूबे यज़दानी की खिताबः— सन् 772 हि. में (रूहाबाद किछौछा शरीफ में)

आस्तानए अशरफिया की तामीरः— सन् 793 हि. (मअद्दऐ तारीख अर्शे अकरबर है)

पण्डवा शरीफ में आखरी कयामः— सन् 801 हि. ता 803 हि. मुद्दत तीन साल

जौनपुर में आमदः- सन् 805 हि. (अहदे सुल्तान इब्राहिम अशरफी) और मुस्तकिल क़याम किछौछा शरीफ

विसालः— सन् 808 हिजरी

उर्से पाकः— हर साल ऐवाने अषरफ़ किछौछा शरीफ में 24 मुहर्रम उर्से मख़्दूमी की फातेहा व नियाज़ का आग़ाज होता है और कुल शरीफ की

फातेहा 28 मुहर्रम को अदा की जाती है। पूरी दुनियाँ से मख़्दूम अशरफ़ के दिवाने उर्स की तक़रीबात में शामिल होते है।

किछौछा के मुक र पर ज़माना नाज़ करता है
कि जो शहर में जल्वा नुमां मरव्दूम अशरफ हैं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इला-ह-इल्लल्लाहू मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

शजर-ए-हुसैनियां

नज़्म

बख़्श दे या रब शफ़ीऐ दोसरा के वास्ते
सरवरो सैय्यद मुहम्मद मुस्तफ़ा के वास्ते
दीनो दुनिया की मेरी सब मुश्किलें आसान कर
हज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा के वास्ते।
दूर कर दे मेरे मौला मुझसे हर रंजो बला
सिब्ते असग़र उस शहीदे करबला के वास्ते।
मेरे सज्दों को भी या रब कर दे तू ज़ैनुल इबाद
हज़रते सज्जाद रासुल औलिया के वास्ते

इल्म हो बहरे अ़मल और हर अ़मल हो ज़ेरे इल्म
हज़रते बाक़र इमामो पेशवा के वास्ते
सिद्क़ हो गुफ़्तार में और सिद्क़ हो किरदार में
हज़रते सादिक़ शहे सिद्क़ो सफ़ा के वास्ते
सर झुका दूँ जब कहीं सुन लूँ तेरा प्यारा कलाम
मूसा काज़िम शहे सब्रो रज़ा के वास्ते
दे बुलन्दी मुझको भी अपनी रज़ाए ख़ास से
शहे हमनाम अ़ली-ए मुरतज़ा के वास्ते

शजर–ए–हुसैनिया

अल्हमदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। अस्सलावातु वस्सलामु अला रसूलिही मुहम्मदिन अशरफ़िल अम्बियाइ व अ़ला आलिही व असहाबिही अजमईन इला यौमिद्दीन

तारीख़े विसाल व मज़ार शरीफ़

(1) इलाही ब हुरमत सैय्यदे आ़लम फ़ख़्रे बनी आदम ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

मदीना मुनव्वरा 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी

(2) इलाही ब हुरमत हज़रत मुश्किल कुशा मौला अ़ली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु वज–हुल करीम
नजफ़ अशरफ़ 21 रमज़ान 40 हिजरी
(3) इलाही ब हुरमत सैय्यदना इमाम हुसैन अ़ला ज़द्दिही अ़लैहिस्लातु वस्सलाम
करबला-ए-मुअ़ल्ला यौमे आ़शूरा 61 हिजरी
(4) इलाही ब हुरमत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल आबेदिन रज़ियल्लाहु अन्हु
मदीना मुनव्वरा 8 मुहर्रमुल हराम
(5) इलाही ब हुरमत सैय्यदना इमाम बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हु
मदीना मुनव्वरा 7 ज़िलहिज्जा 114 हिजरी
(6) इलाही ब हुरमत सैय्यदना इमाम जाअ़फ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु
मदीना मुनव्वरा 15 रजब 148 हिजरी
(7) इलाही ब हुरमत सैय्यदना इमाम मूसा काज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु **6 रजब 183 हिजरी**
(8) इलाही ब हुरमत सैय्यदना इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु
मशहूर मुक़द्दस 21 रमज़ान 203 हिजरी

शजरा सिलसिल-ए-क़ादरिया अशरफिया

या रब ब मुहम्मद बहरे अली
ब हसन सुल्ताने दी मददे
ब हबीबो ताई हम करख़ी
बसिर्रिओ जुनैदो अमीं मददे
ब अबू बक्रो अब्दुल वाहिद हम
बुलफ़रह व पए हिन्कारी
ब सईदो ग़ौस जीलानी
ब अली महबूबे तर्री मददे
पए अफ़लाहो बुलग़ैसो फ़ाज़िल
ओबैदो जलाल, शहे समनाँ
पए नूरूल ऐन व बहरे हसन
ब शहीद गोशा नशीं मददे
ब नवाज़ो सिफ़त, ब क़लन्दरे हक
पए मन्सब व अशरफ़, बू अहमद
पए मुख़्तारो इज़हार मुर्शिदे मन
ब आलमगीर मिस्कीं मदद

शजर–ए–क़ादरिया जलालिया अशरफ़िया हस्निया बसरिया
(नज़्म)

(1) कर अता हुस्ने अ़मल के साथ मेरा ख़ातिमा
शहे हसन बसरी अमीरूल औलिया के वास्ते

(2) मेरा सीना हो इलाही और हो तेरा हबीब
शहे हबीब अज़मी की शाने दिलरूबा के वास्ते

(3) या इलाही रंगे दाऊदी में मुझको रंग दे
हज़रते दाऊद ताई ख़ुशनवा के वास्ते

(4) या इलाही अम्र बिल मअरूफ़ की तौफ़िक़ दे
हज़रते मअरूफ़ करख़ी बे रिया के वास्ते

(5) या इलाही मुझ पे हर सिर्रे ख़फ़ी कर दे जली
शहे सिर्री सकती के कश्फ़े हक़ नुमा के वास्ते

(6) या इलाही हो जुनूदे हक़ में मेरा भी शुमार
हजरत शेख़ जुनूदे पारसा के वास्ते

(7) या इलाही दौलते सिद्क़ो सफ़ा कर दे नसीब
हज़रते बू बक्र शिबली बा सफ़ा के वास्ते

(8) एक देखूँ एक जानूँ एक का होकर रहूँ
अ़ब्दे वाहिद शह तमीमी की सख़ा के वास्ते

(9) दीनो दुनिया की अता कर दीजिये सब फ़रहतें
हज़रते बुल फ़राह तरतूस बाखुदा के वास्ते
(10) या इलाही हुस्न नियत, हुस्न ईमाँ कर अता
बुल हसन हिंकारी पीरे हुदा के वास्ते
(11) आक़िबत मेरी मुबारक, हो मेरी दुनिया सईद
बू सईद शह मुबारक बा खुदा के वास्ते
(12) अल ग़यास अल ग़यास या ग़यासुल आलमीन
ग़ौसे आज़म बन्द-ए-कुदरत नुमा के वास्ते
(13) ज़िक्रे हद्दादी की जलवा रेज़याँ कर दे अता
शाह अली हद्दाद मेरे पेशवा के वास्ते
(14) बख़्श दे या रब मुझे दारैन की सारी फ़लाह
उस अली अफलह क जुहदो इत्तेक़ा के वास्ते
(15) मुझे पे या रब झूम के बरसे तेरा अबर करम
हज़रते बलग़ैस उस बहरे अता के वास्ते
(16) फ़ज़्ल फ़रमा और मुर्दा दिल को दे दे ज़िन्दगी
इब्ने ईसा फ़ाज़िले हक आशना के वास्ते
(17) रात दिन बरसा करे ज़ौक़े इबादत की घटा
शाह उबैदे ग़ैशी हक़ बे रिया के वास्ते
(18) दीन को मेरे जलालत कर अता ऐ जुलजलाल
शाह जलालुद्दीन बुख़ारी गश्तिया के वास्ते

(19) दोनों आलम की शराफ़त बख़्श दे मौला मुझे
अशरफ़े सिमनाँ मेरे ग़ौसुल वरा के वास्ते
(20) आँख में दे नूर, मेरे रिज़्क़ में दे बरकतें
अब्दे रज़्ज़ाक़ नूरे ऐने औलिया के वास्ते
(21) मेरी दुनिया हो हसीं और मेरा उक़्बा हो हसीं
शाह हसन सरदार बज़्मे अत्क़िया के वास्ते
(22) दिल में हो इश्क़े मुहम्मद लब पे हो हम्दे ख़ुदा
शाह मुहम्मद अशरफ़ शाहिद हुदा के वास्ते
(23) मेरा सर हो और सौदाए मुहम्मद मुस्तफ़ा
हज़रते सैय्यद मुहम्मद औलिया के वास्ते
(24) राहे हक़ में मुझको जाँबाज़ी का जज़्बा कर अता
शाह हुसैन सानी सब्रो रज़ा के वास्ते
(25) बरकतों से भर दे मेरा कासए दिल ऐ करीम
हज़रते अब्दुर्रसूले पारसा के वास्ते
(26) नूर से भरपूर हो जाए मेरा दिल मेरा सर
शाह नुरूल्लाह की नूरी ज़िया के वास्ते
(27) मेरा सर हो और हो सर मस्ती-ए हुब्बे इलाह
शाह हिदायतुल्लाह मेरे नाख़ुदा के वास्ते
(28) बस इनायत ही इनायत हो मेरे अल्लाह की
शाह इनायतुल्लाह की महरो वफ़ा के वास्ते

(29) या इलाही फ़ज़्ले अशरफ़ रात दिन मुझ पर रहे
सैय्यद अशरफ़ साहिबे जूदो अता के वास्ते
(30) ऐ खुदा तेरी नवाज़िश हर घड़ी मुझ पर रहे
शाह नवाज़ उस साहिबे जूदो सख़ा के वास्ते
(31) या इलाही उम्र भर ख़ाके दरे अशरफ़ रहूँ
इस सिफ़त अशरफ़ के जुहदे बे रिया के वास्ते
(32) मस्त कर दे मस्त रख और अपने मस्तों में उठा
हज़रते सैय्यद कलन्दर की विला के वास्ते
(33) या इलाहुल आलमीं मन्सब मेरा कर दे बुलन्द
सैय्यदे मन्सब अली के इर्तिक़ा के वास्ते
(34) जिस तरफ़ देखूँ नज़र आये मुझे अशरफ़ का नूर
हज़रते अशरफ़ हुसैन अशरफ़ नुमा के वास्ते
(35) या इलाही हम्द से तेरी कभी ग़ाफिल न हूँ
शाह बू अहमद हमारे पेशवा के वास्ते
(36) हम पे अहमद का हो साया हम पे अशरफ़ का करम
सैय्यदी मुख़्तार अशरफ़ बा सफ़ा के वास्ते
(37) या इलाही बख़्श दे हम सब को तू रोज़े जज़ा
सैय्यदी इज़हार अशरफ़ रहनुमा के वास्ते
हज़रते आलमगीर अशरफ़ की यही है इल्तिजा
ख़ातिमा बिलख़ैर हो ख़ैरूलवरा के वास्ते

शजर–ए–सिलसिल–ए–क़ादरिया
जलालिया अशरफ़िया हसनिया बसरिया

तारिख़े विसाल व मज़ार शरीफ़

(1) इलाही ब हुरमते ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु **बसरा 17 मुहर्रमुल हराम 110 हिजरी**

(2) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा हबीब अ़जमी रज़ियल्लाहु अन्हु।

बग़दाद शरीफ़ 3/रबीउल आख़िर 156 हिजरी

(3) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ दाऊद ताई रहमतुल्लाहि अलैहि।

बग़दाद शरीफ़ 27/रबीउल आख़िर 165 हिजरी

(4) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ मअ़रूफ़ करख़ी रहमतुल्लाहि अलैहि।

बग़दाद शरीफ़ 2/मुहर्रम 200 हिजरी

(5) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा अबुल हसन सिर्री सक़ती रहमतुल्लाहि अलैहि।

बग़दाद शरीफ़ 3/रमज़ान 253 हिजरी

(6) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि।

बग़दाद शरीफ़ 27/रजब 297/हिजरी

(7) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ अबू बक्र शिब्ली रहमतुल्लाहि अलैहि।

बग़दाद शरीफ़ 27/रजब 324/हिजरी

(8)इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ अबूल फ़ज़ल अब्दुल वाहिद तमीमी रहमतुल्लाहि अलैहि।

मक़बरा इमाम अहमद बिन हम्बल बग़दाद

बग़दाद 22/जमादिउल आख़िर 425 हिजरी

(9) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ अबूल फ़रह तरसूसी रहमतुल्लाहि अलैहि

बग़दाद शरीफ़ 3/शअबान 447/हिजरी

(10) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ अबूल हसन हंकारी रहमतुल्लाहि अलैहि

बग़दाद शरीफ़ पहली मुहर्रम 486/हिजरी

(11) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ अबू सईद मुबारक मख़्ज़ूमी रहमतुल्लाहि अलैहि

पहली मुहर्रम 7/शअबान 512/ हिजरी

(12) इलाही ब हुरमत हज़रत ग़ौसे आज़म महबूबे सुब्हानी कुतबे रब्बानी सैय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि

बग़दाद शरीफ़ 17/ रबीउस्सानी 561 हिजरी

(13) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ अली हद्दद रहमतुल्लाहि अलैहि। (यमन)

(14) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ अबू अफ़लह रहमतुल्लाहि अलैहि। (यमन)

(15) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ कुतुबुल यमन अबुल गैस इब्ने जमील रहमतुल्लाहि अलैहि। (यमन)

(16) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ फ़ाज़िल इब्ने ईसा रहमतुल्लाहि अलैहि। (यमन)

(17) इलाही ब हुरमत हज़रत शेख़ मुहम्मद उबैद गैसी रहमतुल्लाहि अलैहि। (यमन)

(18) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद मख़्दूम जलालुद्दीन बुख़ारी जहानिया जहाँगश्त।

(आजा शरीफ पंजाब)

(19) इलाही ब हुरमत ग़ौसुल आलम महबूबे यज़दानी तारिकुल सल्तनत मख़्दूम सुल्तान औहद उद्दीन मीर सैय्यद अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी कुद्दि-स सिर्रहू।

किछौछा शरीफ़ 28/मुहर्रमुल हराम 808 हिजरी

(20)इलाही ब हुरमत हज़रते हाजी अल हरमैन मख़्दूमुल आफ़ाक़ शैख़ुल इस्लाम हज़रत सैय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक नूरूल ऐन सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहिर्रहमा।

किछौछा शरीफ़ 7/ज़िलहिज्जा 872 हिजरी

(21) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद मुहम्मद हसन ख़ल्फ़ अकबर सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि। **882 हिजरी किछौछा शरीफ़**

(22) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद मुहम्मद अशरफ़ उर्फ़ शाह शहीद सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि।

किछौछा शरीफ़ 909 हिजरी, 910 हिजरी

(23) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद मुहम्मद सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि।

किछौछा शरीफ़

(24) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद हुसैन सानी सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि।

किछौछा शरीफ़

(25)इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद अब्दुर्ररसूल सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह।

किछौछा शरीफ़

(26)इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद नूरूल्लाह सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि।

किछौछा शरीफ़

(27) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद हिदायतुल्लाह सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह। किछौछा शरीफ़

(28) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद इनायतुल्लाह सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह। किछौछा शरीफ़

(29) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद नज़र अशरफ़ सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह।

किछौछा शरीफ़

(30) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद नवाज़ अशरफ़ सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह

किछौछा शरीफ़

(31) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद सिफ़त अशरफ़ सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह

किछौछा शरीफ़

(32)इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद क़लन्दर बख़्श सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह

किछौछा शरीफ़ 1250 हिजरी

(33) इलाही ब हुरमते हज़रत सैय्यद मन्सब अली सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह।

किछौछा शरीफ़ 1307 हिजरी

(34)इलाही ब हुरमते हज़रत मौलाना अलहाज सैय्यद शाह अबू मुहम्मद अशरफ़ हुसैन सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि।

किछौछा शरीफ़ 25 मुहर्रम 1348 हिजरी

(35)इलाही ब हुरमते हज़रत मौलाना अलहाज सैय्यद शाह अबू अहमद अलमदऊ मुहम्मद अली हुसैन अशरफ़ी जीलानी (सज्जादह नशीन) आस्तान–ए–अशरफ़िया सरकारे कलाँ) रहमतुल्लाहि अलैह।

किछौछा शरीफ़ 11/रजब 1355 हिजरी

(36) इलाही ब हुरमते शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन मख़्दूमुल मशाइख़ मौलाना अलहाज अबुल मसऊउ सैय्यद शाह मुहम्मद मुख़्तार अशरफ़ सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैह।

किछौछा शरीफ़ 9/रजब 1417 हिजरी 21 नवम्बर 1996 ई.

(37) इलाही ब हुरमते शेख़े आज़म हज़रत मौलाना अलहाज सैय्यद शाह इज़हार अशरफ़ साहब क़िब्ला सज्जादह नशीन आस्तान–ए–अशरफ़िया सरकारे कलाँ इलाही बतुफ़ैले महबूबुल उलमा हज़रत अल्लामा व मौलाना अश्शाह सैय्यद महबूब अशरफ़ अशरफ़ीउल जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि। किछौछा शरीफ 1/जिलकादा 1431 हिजरी, 10 अक्टुबर 2010 ई.

(38)इलाही ब तुफ़ैले मुजाहिदे इस्लाम हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज सैय्यद शाह आलमगीर अशरफ़ अशरफ़ीउल जीलानी।

शजरा सिलसिल–ए–क़ादरिया अशरफ़िया, मुनव्वरिया मुम्मरिया

(1) अल ग़यास अल ग़यास या ग़यासुल आलमीन
ग़ौसे आज़म बन्द-ए-कुदरत नुमा के वास्ते

(2) दिल को इरफ़ाँ दे मेरे दिल को मुनव्वर जल्द कर
शाह दौला और मुनव्वर की ज़िया के वास्ते

(3) कर अता तू मुझको भी अलफ़क़रू फ़ख़री का मक़ाम
शाह मुल्ला अखूँद फ़क़ीरे बा नवा के वास्ते
(4) या इलाही फ़क्र की मुझको इमारत कर अता
उस अमीरे काबुली बा हौसला के वास्ते
(5) या इलाही हम्द से तेरी कभी गाफ़िल न हों
शाह बू अहमद हमारे पेशवा के वास्ते
(6) अहमदे मुख़्तार का ज़िल्ले करम सर पर रहे
सैय्यदी मुख़्तार अशरफ़ बा सफ़ा के वास्ते
(7) तेरे ज़िक्र से शुक्र का इज़हार मैं करता रहूँ
हज़रते इज़हार अशरफ़ बे रिया के वास्ते
(8) या इलाही दीन व दुनिया में मुझे आलमगीर कर
मेरे मुर्शिद की पाकीज़ा दुआ के वास्ते
(9) एक आलमगीर ही क्या सब पे हो तेरा करम
क़ादरी दरबार के सब औलिया के वास्ते

शजरा सिलसिल–ए–क़ादरिया अशरफ़िया, मुनव्वरिया मुअम्मरिया

मज़ार शरीफ़, मदफ़न व तारीख़े विसाल

(1) इलाही ब हुरमत हज़रते ग़ौसे आज़म महबूबे सुब्हानी कुतुबे रब्बानी मीर अबू मुहम्मद सैय्यद मुहइयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी

रहमतुल्लाहि अलैहि। बग़दाद 17/रबीउस्सानी 561 हिजरी
(2) इलाही ब हुरमत हज़रत शाह दौला गुजराती रहमतुल्लाहि अलैहि। (गुजरात)
(3) इलाही ब हुरमत हज़रत शाह मुनव्वर इलाहाबादी रहमतुल्लाहि अलैहि। (इलाहबाद)
(4)इलाही ब हुरमत हज़रत शाह मुल्ला अखूंद रामपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि। (रामपुर)
(5) इलाही ब हुरमत हज़रत शाह अमीर काबुली रहमतुल्लाहि अलैहि। (काबुल)
(6) इलाही ब हुरमत शैख़ुल मशाइख़ अबू अहमद सैय्यद अली हुसैन सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि किछौछा 11/रजब 355 हिजरी
(7)इलाही ब हुरमत मख़्दूमुल मशाइख़ हज़रत मौलाना अलहाज अबुल मसऊद सैय्यद शाह मुहम्मद मुख़्तार अशरफ़ सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि। किछौछा 9/रजब 1417 हिजरी
(8) इलाही ब हुरमते हज़रत शैख़ आज़म मौलाना अलहाज़ सैय्यद शाह इज़हार अशरफ़ सज्जादह नशीन आस्तान–ए–अशरफ़िया सरकारे कलाँ रहमतुल्लाहि अलैहि। किछौछा शरीफ

(9) इलाही ब हुरमते हज़रत शैख़ आज़म मौलाना अलहाज़ सैय्यद शाह महबूब अशरफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि।

किछौछा शरीफ 1/जिलकादा 1431 हिजरी, 10 अक्टुबर 2010 ई.

(10) इलाही ब तुफ़ैले हज़रत पीरे तरीक़त सैय्यद शाह आलमगीर अशरफ अशरफीउल जीलानी।

शजर–ए–ख़्वाजगाँ–ए–चिश्तिया निज़ामिया अशरफ़िया

(नज़्म व मुख़्तसर)

या रब ब मुहम्मद बहरे अली
ब हसन सुलताने दीं मददे
बिन ज़ैद व फुज़ैल व इब्राहीम
व हुज़ैफ़ा अमीनुद्दीं मददे
पए मुम्शाद बू इसहाक़ अहमद
हमशाह मुहम्मद, बू यूसुफ़
मौदूदो शरीफ़ हम उसमाँ
ब मुईनो क़ुतूबद्दीं मददे
फ़रीदो निज़ामो सिराजो अला
पए अशरफ़ो नूरूल ऐन वली

ब हुसैनो ताजो जअफ़रो हम
हाजी पए शाम्सुद्दीन मददे
पए राजुओ अहमदो फ़तहुल्लाह
ब मुराद बहाओ तवक्कुले मन
बहरे दाऊदो नियाज़ अशरफ़
पए अशरफ़ नेक तरीं मददे
ब हुरमत शाह बू अहमद आला हज़रत
अशरफ़ी सज्जादानशीन
पए मुख़्तारो इज़हार मुर्शिदे मन
ब आलमगीर मिस्कीं मददे

शजर–ए–ख़्वाजगाँ
सिलसिल–ए–आलिया चिश्तिया
निज़ामिया अशरफ़िया
(नज़्म व मुख़्तर)

उठे हैं हाथ मेरे रात दिन दुआ के लिये
झुकाए सर हूँ शबो रोज़ किबरिया के लिये
इलाही तेरे करम और तेरी अता के लिये

(1) है बाल बाल मेरा मअसियत का गंजीना
इलाही तुझको दिखाऊँगा कैसे मुँह अपना
करीम कर दे करम अपने मुस्तफ़ा के लिये
(2)हमारी दुनिया है एक मुश्किलात की दुनिया
गुनाहगार हैं हम आक़िबत का है ख़तरा
सहारा दे दे हमें अपने मुर्तज़ा के लिये
(3) इलाही हुस्ने अमल की मिले मुझे तौफ़िक़
तेरी मदद हो बहर हाल मेरा ख़ैरे रफ़ीक़
हुज़ूर ख़्वाजा हसन शाह औलिया के लिये
(4) इलाही दीद को मेरी वो ज़ौक़े वहदत दे
जो वहम आलमे कसरत के मेट दे नक़्शो
उस अब्दे वाहिद सरदारे अत्क़िया के लिये
(5) तू अपने फ़ज़्ल का मुझको बनादे सरचश्मा
न मैं न मेरे पास कोई भी रहे प्यासा
हुज़ूर ख़्वाजा फ़ुज़ैल ऐसे ना ख़ुदा के लिये
(6) तेरी रज़ा पे झुकाए रहूँ सरे तसलीम
न छूटे हाथ से दामाने दीने इब्राहीम
इलाही ख़्वाजा इब्राहीम बादशाह के लिये
(7) जब आएं फेअले सदीदो कबीह मीज़ाँ में,
तो हज़फ़ मेरे गुनाहों को तू फ़रमा दे
सदीदे दीं हुज़ैफ़ा के इत्तिक़ा के लिये

(8) इलाही ज़ोर अता कर दे मेरी हिम्मत को
कि अपनी आँखों में रख लूँ तेरी अमानत को
अमीने दीं हुबैरा खुदानुमा के लिये
(9) ब हक़्क़े ख़्वाजा–ए–मुम्शाद जो भी दुआहो मेरी
तू उसको दे दे इलाही उलू–ए दैनूरी
तू अपने फ़ज़्लो करम के लिये अता के लिये
(10) नुमूद की हो तमन्ना न मुझको ख़्वाहिशेनाम
रहूँ इलाही हमेशा गुलाम ख़्वाजा–ए–शाम
हुजूर ख़्वाजा बू इसहाक़ मुक़्तदा के लिये
(11) इलाही सागरे अब्दाल का मिले जुरआ
कि जिसको हज़रते बू अहमद वली ने पिया
तड़प रहा हूँ इसी राह में फ़ना के लिये
(12) इलाही ख़्वाब में यूँ लुत्फ़े सरमदी होजाए
कि मुझको दीद जमाले मुहम्मदी हो जाए
इब्ने अबू अहमद चिश्ती हक़ आशना के लिये
(13) झुका रहे सरे तसलीम लब पे न आये उफ
बहक्क़े नासिर दीं ख़्वाजा अबू यूसुफ़
जियूँ मरूँ तो बस अल्लाह की रज़ा के लिये
(14) कुछ ऐसा मुझ पे करम कर दे मेरे रब्बे वदूद
कि कुत्बे दीं मेरे शाह ख़्वाजा–ए मौदूद
करूँ दवादो मुहब्बत मेरे ख़ुदा के लिये

(15) इलाही बंदे पे ऐसा हो तेरा लुत्फ़े लतीफ़
बहक़्क़े ज़न्दनी ख़्वाजा शरीफ़ इब्ने शरीफ़
कि मरता जीता रहूँ दीने मुस्तफा के लिये
(16) इलाही बढ़ती रहे मेरी दौलते ईमाँ
बहक़्क़े हारूनी यानी ख़्वाजा–ए उस्माँ
जियूँ खुदा के लिये और मरूँ ख़ुदा के लिये
(17) इलाही जाऊँ कहाँ होके मैं तेरा मँगता
मेरे मुईन मदद कर, मदद मेरे दाता
मुइने दीं शाहनशाहे औलिया के लिये
(18) क़ब्रो हश्र हो या मैं रहूँ इलाही कहीं
न छूटे हाथ से दामाने ख़्वाज–ए क़ुतुबे दीं
मेरी दुआ है इसी एक मुद्दआ के लिये
(19) तेरा गुलाम भी गर शीरीं काम हो जाए
तो शाह गंज शकर तेरा नाम हो जाए
फ़रीदे दीं की यकताई कर अता के लिये
(20) इलाही सागरे सुल्ताँ का कोई क़तरा
इलाही अब्रे करामत का मुझ पे एक छींटा
निज़ामे दीं की महबूब हर अदा के लिये
(21) इलाही मेरी बसीरत को वो तरक़्क़ी दे
कि जिस चिराग़ को देखूँ नज़र तुझी पे पड़े
सिराजे हक़ के लिये तेरे आइना के लिये

(22) इलाही बंदे पे वह इल्तिफ़ात फ़रमा दे
जो दीनो दुनिया को गंजे नबात फ़रमा दे
अला–ए–हक़ मेरे सुल्तान पण्डवा के लिये

(23) कोई भी मन्ज़िले मक़सूद अब न होदुशवार
हर एक कश्ती–ए–उम्मीद का हो बेड़ा पार
हुज़ूर अशरफ़े सरदार क़ाफ़िला के लिये

(24) यहाँ भी अच्छी हो या रब वहाँ भी अच्छी हा
कहीं भी रोज़ी में मेरी कभी न तंगी हो
जनाब बन्द–ए–रज़्ज़ाक ख़ुदा के लिये

(25) जिहादे नफ़्स की ताक़त मुझे अता कर दे
तेरे सिवा न मेरा दिल कहीं किसी से डरे
हुसैन सैय्यदे क़त्ताल सूरमा के लिये

(26) रहे इलाही न बंदा तेरे कहीं मुहताज
तेरी फ़क़ीरी का सर पर रहे हमेशा ताज
जनाब ताज अवधी बा सफ़ा के लिये

(27) इलाही दौलते ईमाँ से हों मालामाल
हर अच्छे हाल से बढ़कर हो मेरा इस्तिक़बाल
जनाब सैय्यदे जअफ़र शाहे हुदा के लिये

(28) दे वो रोशनी जो रोशन करे ज़मीनो ज़माँ
वो रौशनी जो बने सैय्यद चिराग़े जहाँ
उठाए हाथ हों या रब इसी ज़िया के लिये

(29)हो लब पे हम्दे ख़ुदा और ज़बाँ हो वक़्फ़े दुरूद
हो ऐसी ज़िन्दगी तो ज़िन्दगी भी हो महमूद
जनाब सैय्यदे महमूद पारसा के लिये
(30) जुबानो दिल पे रहे ला इलाहा इल्ला हू
बहक़्क़े हज़रते सुल्तानो सैय्यद राजू
इलाही तेरे ही ख़ौफ़ो तेरी रज़ा के लिये
(31) अगर इलाही हो मुझ पे इलाही तेरे करम की मदद
तो दिल में ज़िक्रे ख़ुदा हो ज़बाँ हम्द
जनाब सैय्यदे अहमद के इत्तेक़ा के लिये
(32) फ़क़ीर हो के मैं समझूँ कि हो गया हूँ शाह
अगर करम करें मुझपे हुजूर फ़त्हुल्लाह
इलाही भीख दे उस मेरे पेशवा के लिये
(33) इलाही सुन ले ग़रीबों की इतनी सी फ़रयाद
कि हर सवाल की आग़ोश में हो मेरी मुराद
मुराद मेरी कश्ती के इस ना ख़ुदा के लिये
(34) मुझे मिले मेरी क़ीमत मुझे है इसका यक़ीं
करम करें जो मेरे हाल पर बहाउद्दीं
मैं कर रहा हूँ इल्तिजा इसी बहा के लिये
(35) ज़ईफ़ बंदे के बाजू को यूँ क़वी कर दे
जो दो जहाँ से इलाही मुझे ग़नी कर दे
शाह तवक्कुल अली साहिबे ग़ना के लिये

(36) इलाही हज़रते दाऊद का सुनूँ नग़मा
बस एक वज्द में हो जाए तय फ़ना व बक़ा
जनाब सैय्यद दाऊद रहनुमा के लिये
(37) इलाही सदक़ा ओ हज हो कि रोज़ा हो कि नमाज़
जहाँ भी हो वह बने तेरी बज़्मे राज़ो न्याज़
न्याज़ अशरफ़े सरदार बा सफ़ा के लिये
(38)हमारी कश्ती–ए मक़सद को उसका साहिल दे
इलाही अपनी इबादत का ज़ौक़े कामिल दे
जनाब अशरफ़ हुसैन ऐसे बे रिया के लिये
(39) अज़ीज़ दिल मुझे कर दे अगर ख़ुदा–ए–अज़ीज़
तो एक चीज़ बने उसका बंद–ए–नाचीज़
अ़ली हुसैन ख़ुश अतवार ख़ुश अदा के लिये
(40) इलाही जामे मोहब्बत का कर दे मतवाला
पियूँ मैं मुर्शिदे बरहक़ का रात दिन प्याला
हुज़ूर सैय्यदे मुख़्तार बा सफ़ा के लिये
(41) इलाही रातो दिन तेरे करम की बारिश हो
रहे मुर्शिद का साया जब क़्यामत की ताबिश हो
सैय्यदी इज़हार मेरे मुक़्तदा के लिये
(42)इलाही हज़रते आलमगीर पे ही नहीं मौक़ूफ़
हर अशरफ़ी के लिए दुआ में हूँ मसरूफ़
तू बख़्श दे इन सारे औलिया के लिए

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शजरा मशाइख़ सिलसिल–ए–आलिया चिशितया निज़ामिया अशरफ़िया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ اَشْرَفِ الْاَنْبِيَاءِ عَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

मज़ार शरीफ़ व तारीख़े विसाल

(1) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यदे आलम अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मदीना मुनव्वरा 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी

(2) इलाही ब हुरमत हज़रत मुश्किल कुशा अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज ह्–हुल करीम

नजफ़ अशरफ़ 21/रमज़ान 40 हिजरी

(3) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि। **बसरा 110 हिजरी**

(4) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु।

बसरा 176 हिजरी

(5) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा फुज़ैल बिन अ़याज रज़ियल्लाहु अन्हु ।

187 हिजरी

(6) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा सुल्तान इब्राहिम इब्ने अदहम रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

शाम 267 हिजरी 268 हिजरी

(7) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा सदीदुद्दीन हुज़ैफा मरअ़शी रहमतुल्लाहि अलैहि।

शाम 14/शव्वाल

(8) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा अमीनुद्दीन हुबैरा बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि।

मुत्तसिल बसरा 18/शव्वाल 287/289

(9) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा मुम्शाद उल दैनूरी रहमतुल्लाहि अलैहि। **299/हिजरी**

(10) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक शामी रहमतुल्लाहि अलैहि।

अ़क्का शाम

(11) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा अबू अहमद अब्दाल चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि।

हरात चिश्त 355 हिजरी

(12) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद इब्ने अबू अहमद चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि

हरात 411 हिजरी

(13) इलाही ब हुरमते हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि।

हरात चिश्त 459 हिजरी

(14) इलाही ब हुरमते हज़रत ख़्वाजा कुतूबुद्दीन मौदूद चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि।

चिश्त 527 हिजरी

(15) इलाही ब हुरमते हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी रहमतुल्लाहि अलैहि।

शाम 3/रजब 612 हिजरी

(16) इलाही ब हुरमते हज़रत ख्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैहि।

मक्का मुअज़्ज़मा 617/हिजरी

(17) इलाही ब हुरमते हज़रत ख़्वाजा–ए–ख़्वाजगाँ ग़रीब नवाज़ सुल्तानुल हिन्द सैय्यद मुईन उद्दीन चिश्ती हसन संजरी अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैहि।

अजमेर शरीफ़ 6/रजब 633 हिजरी

(18) इलाही ब हुरमते हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी औशी रहमतुल्लाहि अलैहि।

महरोली देहली 14/रबीउल अव्वल 634 हिजरी

(19) इलाही ब हुरमत ख़्वाजा मसऊद बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि अलैहि।

पाक पटन 669 हिजरी

(20) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा सुल्तानुल मशाइख़ निज़ामुद्दीन इलाही रहमतुल्लाहि अलैहि।

दिल्ली

(21) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा उस्मान अख़ी सिराजुल हक़ वद्दीन आइन–ए–हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि।

(22) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा शेख़ अला–उल–हक़ गंज नबात इब्ने सअद लाहौरी रहमतुल्लाहि अलैहि।

(23) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा ग़ौसूल आलम महबूबे यज़दानी मख़्दूम सुल्तान सैय्यद अशरफ़ जहाँ गीर समनानी रहमतुल्लाहि अलैहि।

28 मुहर्रम 808 हिजरी

(24) इलाही ब हुरमत हज़रत ख़्वाजा मख़्दूमुल आफ़ाक़ सैय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक नूरूल ऐन नबीर–ए–ग़ौसे आज़म व सज्जादह नशीन आस्तान–ए–अशरफ़िया। किछौछा शरीफ़ 872 हिजरी

शाख़ हस्निया चिश्तिया सरकारे कलाँ

(1) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद मुहम्मद हसन। इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद हुसैन क़ताल ख़ल्फ़ अकबर सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि।

(2) इलाही ब हुरमत सैय्यद मुहम्मद अशरफ़ उर्फ़ शाह

शाख़ हस्निया चिश्तिया

(1) ख़ल्फ़े सानी वाली ए–जौनपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि।

(2) इलाही ब हुरमत हज़रत शाह जअफ़र

(3) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद मुहम्मद सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(4) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद हुसैन सानी सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(5) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद अब्दुल रसूल सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(6) इलाही ब हुरमत हज़रत नूरूल्लाह सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(3) इलाही ब हुरमत हाजी सैय्यद चिराग़ जहाँ रहमतुल्लाहि अलैहि

(4) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद महमूद शामसुल हक़ वद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(5) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद शाह राजू रहमतुल्लाहि अलैहि

(6) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि

(7) इलाही ब हुरमत हज़रत हिदायतुल्लाह सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(8) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद इनायतुल्लाह सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(9) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद नज़र सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(10) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद नवाज़ अशरफ़ सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(11) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद सिफ़त

(7) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि

(8) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद मुहम्मद मुराद रहमतुल्लाहि अलैहि

(9) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद बहाउद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि

(10) इलाही ब हुरमत हज़रत सैय्यद तवक्कुल अली रहमतुल्लाहि अलैहि

(11) इलाही ब हुरमत हज़रत

सज्जादह नशीन
रहमतुल्लाहि अलैहि
(12) इलाही ब हुरमत
हज़रत सैय्यद
क़लन्दर बख़्श
सज्जादह नशीन
रहमतुल्लाहि अलैहि
(13) इलाही ब हुरमत
हज़रत सैय्यद मन्सब
अली सज्जादह
नशीन रहमतुल्लाहि
अलैहि
(14) इलाही ब हुरमत
हज़रत मौलाना
अलहाज सैय्यद शाह
अबू मुहम्मद अशरफ़
हुसैन सज्जादह
नशीन रहमतुल्लाहि
अलैहि

दाऊद अली
रहमतुल्लाहि अलैहि
(12) इलाही ब
हुरमत हज़रत
मौलाना सैय्यद
शाह न्याज़ अशरफ़
रहमतुल्लाहि अलैहि
(13) इलाही ब
हुरमत हज़रत
सैय्यद गुलाम हुसैन
रहमतुल्लाहि अलैहि
(14) इलाही ब
हुरमत हज़रत
सैय्यद अबुल हसन
रहमतुल्लाहि अलैहि

(15) इलाही ब हुरमत
हज़रत मौलाना सैय्यद
शाह अबू अहमद अलमदऊ
मुहम्मद अली हुसैन
अशरफ़ी उल जीलानी
सज्जादह नशीन
आस्तान–ए अशरफ़िया
रहमतुल्लाहि अलैहि

(15) इलाही ब
हुरमत हज़रत
सैय्यद मकबूल
अशरफ़
रहमतुल्लाहि
अलैहि

(16) इलाही ब हुरमत
शैख़ुल इस्लाम वल
मुस्लिमीन मख़्दूमुल
मशाइख़ हज़रत मौलाना
अबुल मसऊद सैय्यद शाह
मुहम्मद मुख़्तार अशरफ़
सज्जादह नशीन
रहमतुल्लाहि अलैहि

(16) इलाही ब
हुरमत हज़रत
सैय्यद महबूब
अशरफ़
रहमतुल्लाहि
अलैहि

(17) इलाही ब हुरमत
शेख़े आज़म मख़्दूमुल
उलमा हज़रत मौलाना
अलहाज सैय्यद शाह

(17) इलाही
ब तुफ़ैल
हज़रत सैय्यद
आलमगीर

इज़हार अशरफ़ अशरफ़ी उल जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि

अशरफ़ अशरफ़ीउल जीलानी जानशीन हुजूर महबूबुल उलमा

शजरा—ए—नसब

मज़ार शरीफ़ व तारीख़े विसाल

सैय्यदे आलम रहमते आलम फ़ख़्रे बनी आदम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। **मदीना मुनव्वरा 12/रबीउल अव्वल 11 हिजरी**

सैय्यदना अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज—हुल करीम रज़ियल्लाहु अन्हु। **नजफ़ अशरफ़ 40 हिजरी**

(1) सैय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा इनके फ़रज़न्द।

मदीना मुनव्वरा 11 हिजरी

(2) सैय्यदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द। **मदीना मुनव्वरा 50 हिजरी**

(3) सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द।

मदीना मुनव्वरा 90 हिजरी

(4)सैय्यदना अब्दुल्लाह अलमहज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द। **110 हिजरी**

(5) सैय्यदना मूसाअलजून रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द। **इराक़ 130 हिजरी**

(6) सैय्यदना अब्दुल्लाह सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द।

इराक़ 130 हिजरी

(7) सैय्यदना मूसा सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द।

(8) सैय्यदना दाऊद मलिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द।

इराक़ 140 हिजरी

(9) सैय्यदना सैय्यद मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द।

इराक़ 300 हिजरी

(10) सैय्यदना सैय्यद यहया ज़ाहिद रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द।

इराक़ 300 हिजरी

(11) सैय्यदना अब्दुल्लाह जैली रज़ियल्लाहु अन्हु जीलानी इनके फ़रज़न्द।

इराक़ 310 हिजरी

(12) सैय्यदना अबू स्वालेह मूसा जंगी दोस्त रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द।

जीलान इराक़ 310 हिजरी

(13) सैय्यदना ग़ौसे आज़म महबूबे सुब्हानी कुतुबे रब्बानी मुहइ उद्दीन सैय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द।

बग़दाद शरीफ़

(14) सैय्यदना सैय्यद ताजुद्दीन अबु बक्र अब्दुर्रज़्ज़ाक रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द

इराक़

(15) सैय्यदना सैय्यद इमामुद्दीन अबू सालेह नसर रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द।

इराक़

(16) सैय्यदना सैय्यद अबू नसर मुहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द।

इराक

(17) सैय्यदना सैय्यद सैफुद्दीन यहया हमवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इनके फ़रज़न्द।

हामा शरीफ़, शाम

(18) सैय्यदना सैय्यद शम्सुद्दीन जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द। हामा शरीफ़

(19) सैय्यदना सैय्यद अला उद्दीन अली रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द। हामा शरीफ़

(20) सैय्यदना सैय्यद बदरूद्दीन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इनके फ़रज़न्द। हामा शरीफ़

(21) सैय्यदना सैय्यद अबूल अब्बास अहमद जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द

इराक़

(22) सैय्यदना सैय्यद अब्दुल ग़फूर हसन जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द।

बग़दाद

(23) सैय्यदना सैय्यद अबुल हसन सैय्यद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ नूरूल ऐन सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि किछौछा शरीफ़ इनके फ़रज़न्द। 872 हिजरी

(24) सैय्यदना सैय्यद हसन ख़ल्फ़ अकबर हज़रत नूरूल ऐन सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द।

किछौछा शरीफ़ 882 हिजरी

(25) सैय्यदना सैय्यद शाह मुहम्मद अशरफ़ शहीद सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द **किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी**

(26) सैय्यदना सैय्यद शाह मुहम्मद सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द।

(27) सैय्यदना सैय्यद शाह अबुल फ़तह ज़िन्दा पीर रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द।

किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी

(28) सैय्यदना सैय्यद शाह उसमान रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द

किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी

(29) सैय्यदना सैय्यद शाह अज़ीज़ुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द

किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी

(30) सैय्यदना सैय्यद शाह जमालुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द

किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी

(31) सैय्यद शाह ग़ौस रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द **किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी**

(32) सैय्यदना सैय्यद शाह मुहम्मद नवाज़ अशरफ़ सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द

किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी

(33) सैय्यदना सैय्यद तुराब अली रहमतुल्लाहि अलैहि इनके फ़रज़न्द

किछौछा शरीफ़ 910 हिजरी

(34) सैय्यदना सैय्यद शाह कलन्दर बख़्श सज्जादह नशीन रहमतुल्लाहि अलैहि इब्नहू

(35) सैय्यद मंसब अली सज्जादह नशीन इब्नहू सैय्यद गुलाम हुसैन इब्नहू सैय्यद अबुल हसन इब्नहू सैय्यद मकबूल अशरफ़ इब्नहू सैय्यद अल्लामा मौलाना शाह सैय्यद महबूब अशरफ़ अशरफ़ीउल जीलानी इब्नहू सैय्यद शाह आलमगीर अशरफ़ अशरफ़ीउल जीलानी

मुख़्तसर वज़ाइफ़ और ज़रूरी नसीहतें

बाद नमाज़े फ़ज्र 'या अज़ीजो या अल्लाहो' एक सौ मर्तबा। बाद नमाज़े जुहर 'या करीमो या अल्लाहो' एक सौ मर्तबा। बाद नमाज़े अस्र 'या जब्बारो या अल्लाहो' एक सौ मर्तबा। बाद नमाज़े मग़रिब 'या सत्तारो या अल्लाहो' एक सौ मर्तबा। बाद नमाज़े इशा 'या ग़फ़्फ़ारो या अल्लाहो' एक सौ मर्तबा।

हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी एक मर्तबा। सूरए इख़्लास यानी कुल हुवल्लाहु अहद दस मर्तबा, कल्मा तौहीद दस मर्तबा या कम से कम तीन मर्तबा बुलन्द आवज़ से पढ़े।

सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल्हम्दु लिल्लाह 33 मर्तबा, अल्लाहु अकबर 34 मर्तबा, कल्मा–ए–तम्जीद एक मर्तबा पढ़ा करे, दुरूद शरीफ़ जिस क़दर ज़्यादा पढ़ सके पढ़े।

सच्चे तालिब के लिये ज़रूरी है कि अक़ाइदे हक्क़ा अहले सुन्नत व जमाअत पर

सल्फ सालिहीन व बुजुर्गाने दीन के मुताबिक़ मज़बूती से जमा रहे और नमाज़ पंजगाना बा जमाअ़त हरगिज़ न छोड़े। नमाज़ फ़ज्र हमेशा और नमाज़ ज़ोहर को गर्मियों में आख़िर वक़्त में अदा करें। बाक़ी नमाज़ें अव्वल वक़्त ही में अदा कर लिया करे और ज़िन्दगी में जो फ़र्ज़ और वाजिब नमाज़ें ख़ुदा न ख़्वास्ता छूट गयी हों उनकी क़ज़ा पढ़े। क्यों कि जिसके ज़िम्मे एक नमाज़ फ़र्ज़ और वाजिब नमाज़ेँ ख़ुदा न ख़्वास्ता छूट गयी हों उनकी क़ज़ा पढ़े। क्यों कि जिसके ज़िम्मे एक नमाज़ फ़र्ज़ भी बाक़ी है उसकी नमाज़े नफ़िल क़ाबिले कुबूल नहीं होती।

क़ज़ाए उमरी का तरीक़ा :- छूटी हुई नमाज़ों के अदा करने का तरीक़ा ये है कि पहले अपने बालिग़ होने के साल को देखे, फिर देखे कि कब से नमाज़ का पाबन्द है। अगर पता चले कि मसलन बालिग़ होने के पाँच साल बाद पाबन्दी के साथ नमाज़ अदा होती रही तो पाँच साल की नमाज़ इस तरह क़ज़ा

पढ़े कि हर नमाज़ के साथ उसकी पाँच क़ज़ाएं भी पढ़ लें तो एक साल में फ़र्ज़ अदा होगा और अगर वक़्त की नमाज़ के साथ सिर्फ़ एक की क़ज़ा पढ़े तो पाँच साल में हिसाब पूरा होगा। इन क़ज़ा नमाजों के पढ़ने में छुपाने का लिहाज करे। वितर की नमाज़ की भी क़ज़ा पढ़े। यानी हर दिन बीस रकअतों के हिसाब से क़ज़ा पढ़े। क़ज़ा नमाज़ों की नियत इस तरह करे। नियत की मैंने सबसे पहले नमाज़ जुहर या अस्र की जो मुझसे क़ज़ा हुई। जो बअज़ बुज़ुर्गों ने रजब या शाअबान में चार रकअत क़ज़ाए उमरी की तअलीम दी है उसका मतलब ये है कि हर नमाज़ की क़ज़ा पढ़े और जुर्म ताख़ीर (सुस्ती) पर शर्मिन्दगी का इज़हार करते हुए साल में एक दिन और चार रकअत भी पढ़ ले।

यही हाल रोज़ा ज़कात का भी है कि जिसके ज़िम्मे कोई फ़र्ज़ बाक़ी है उसका दौलत हासिल कर चुका हो। यानी ड्यूटी से

ज़्यादा काम की उजरत का मुस्तहिक़ वह है जो अपनी ड्यूटी अदा कर चुका हो।

नमाज़ तहज्जुद का तरीका :- नमाज़ तहज्जुद रात को बारह रकअतें ख़्वाह इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में बाद सूरह फ़ातिहा के सूरह इख़्लास बारह मर्तबा, दूसरी रकअत में ग्यारह मर्तबा इसी तरह करता हुआ बारहवीं रकअत में एक मर्तबा पढ़े ख्वाह दूसरी सूरतें पढ़े।

नमाज़ इशराक :- सूरज के तुलूअ़ (उदय) होकर सवा नेज़ा बुलन्द होने के बाद चार रकअत पढ़े।

नमाज़ चाश्त :- सूरज निकलने के दो तीन घण्टे गुज़र जाने पर चार रकअत पढ़े। और नमाज़ अव्वबीन न छोड़े बाद मग़रिब में रकअत और न हो सके तो छः रकआ़त बाद सूरह फ़ातिहा के ग्यारह बार सूरह इख़्लास के साथ पढ़े।

तरीक़ा हल्क़-ए-ज़िक्र

ज़िक्र करने वालों में से किसी को खुसूसन जो मुरीद होने में सीनियर हो जिस को यार पेश क़दम कहते हैं, सदर बनाकर दायरा वार सब लोग बैठ जायें और हर एक अपने सीने को सर हल्क़े यानी हल्क़े के सदर के सीने के सामने रखे और चार ज़ानू सब इस तरह बैठें कि दाहिने पाँव के अंगूठे और उसके पास की उंगली से बांए पैर की रग कीमास को पकड़ें जो घुटने के नीचे होती है और फिर ज़िक्र इस तरह शुरू करें कि ला को दाहिने हाथ के मूँढे के क़रीब तक ले जाएं और इलाह को दाहिने मूँढे से ले चले और लफ़्ज़ इल्लल्लाह पूरे ज़ोर के साथ बाएं सीने के नीचे मारे उस वक़्त आख़िर में आवाज़ मुँह बंद करके इस तरह ख़त्म करे कि आवाज़ सीने में गूँज जाए और तमाम ज़ाकिरीन आवाज़ सर (सदर) हल्क़े के साथ साथ रखें।

ला इलाहा इल्लल्लाह 200 मर्तबा। इल्लल्लाह 400 मर्तबा। अल्लाह 600 मर्तबा। और हक़ हू 100 मर्तबा उम्दा आवाज़ी के साथ कहें। जब एक ज़िक्रकी तादाद पूरी हो जाए तो सब लोग खड़े हो जाएं और दोनों हाथों को मिलाकर 'ला' कहते हुए दोनों हाथों को इस तरह ऊपर उठाएं जैसे हथोड़े को हाथ में लेकर ऊपर उठाया जाता है फिर 'इल्लल्लाह' कहते हुए दोनों हाथों को नीचे लाकर ज़ोर से इस तरह झटक दे जिस तरह किसी चीज़ पर हथोड़ा मारा जाता है। फिर पूरे खुशूअ़ व ख़ुजूअ़ (तवज्जो) के साथ 'मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' कहें। जब हर ज़िक्रकी तादाद पूरी हो जाए तो लोग आँखें बंद करके अपने मुर्शिद का तसव्वुर करें फिर सर हलक़ा दुआ ख़त्म पढ़े और सब लोग आमीन कहें फिर तकबीरे आ़शिक़ाँ पढ़ें। (ज़िक्रके और दूसरे तरीक़े और उसके रंग व नूर के मुतअ़ल्लिक़ अपने मुर्शिद से ज़बानी तअलीम हासिल करें।)

इस्तग़फ़ार मलाइका

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ी मि व बिहम्दिही अस्तग़फिरूल्लाह। रोज़ाना सौ मर्तबा पढ़ने वाला बहुत रिज़्क़ पाता है।

क़ब्रों के हाल जानने का तरीक़ा

पहले इक्कीस बार या रब कहे, इसके बाद आसमान की तरफ़ या रूह और क़ब्र पर या रूह अर्रूह की ज़रब लगाए मय्यत का हाल बेदारी में या ख़्वाब में मालूम हो जायेगा।

नफ़िल दोगाना अशरफ़िया

वास्ते कामयाबी काम व मक़सद अव्वल रात जुमा उरूज (चढ़ते) माह से शुरू करे। बाद अदाए नमाज़े इशा दो रक़अत नफ़िल पढ़े दोनों रकअतों में आयतुल कुर्सी एक बार और सूरह इख़्लास ग्यारह बार पढ़े, बाद नमाज़ इसका सवाब बरूह पाक ग़ौसूल आलम महबूबे यज़दानी मख्दूम सुलतान सैय्यद अशरफ़

जहाँगीर सिमनानी कुद्दिस सिर्रुहू बख़्श दे। इसके बाद ग्यारह मर्तबा दुरूद पढ़े और फिर सर नंगा करके दो सौ बार इस शेअ़र को पढ़े

ऐ अशरफ़े ज़माना ज़माने मदद नुमा
दरहाए बस्ता राज़ कलीदे करम कुशा

इसके बाद फिर ग्यारह मर्तबा दुरूद पढ़े फिर अपने मतलब की दुआ माँगे इंशा अल्लाह मुराद हासिल होगी। ये अमल कम से कम चालीस रात करें। और हाकिमों को बस में करने के वास्ते बुज़ुर्गान सिलसिला अशरफिया से ये क़तअ़ भी साबित है कि हाकिम वक़्त के सामने जाते हुए इसको पढ़ लेगा तो हाकिम मेहरबान होगा :

ऐ जहाँगीर पीर ऐ मख़्दूम
न रवद अज़ दरत कसे महरूम
बहरे औलाद ख़ुवैश ऐ अशरफ
हाकिम वक़्त रा बकुन महकूम

अमल सूरह फ़ातिहा

हज़रत महबूबे इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया कुद्दि-स सिर्रूहू से ये नक़्ल है कि जब किसी हाजतमंद को मुश्किल पेश आये तो सूरह फ़ातिहा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहमी के मीम को अल्हम्दु के लाम से मिलाकर पढ़े और दरमियान में अर्रहमार्निरहीम को तीन बार पढ़े। सूरत ख़त्म करने के बाद आमीन तीन बार पढ़कर दुआ माँगे। इंशा अल्लाह दुआ कुबूल होगी।

सिलसिले में दाख़िल होने वाले का नाम व पता

मोहतरम..

निवासी..

डाकखाना............................जिला...............................

प्रदेश....................................तारीख़...........................माह.

.....................................सन्.....................................

सिलसिला शुदा आ़क़िबत कार ऊ बख़ैर बाद बि हुरमतिन्नबी व आलिहिल अमजाद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मुहर मुर्शिद

——oOo——

सलाम

कासिमे जामे कौसर पे लाखों सलाम
शाफए रोज़े महशर पे लाखों सलाम
ज़ोरे बातिल ना जिसके मुकाबिल हुआ
जिसका सानी जहाँ में ना पैदा हुआ
वो खुदा का वली नायबे मुस्तफा
शेरे हक़ शाहे मरदाँ अली मुर्तेज़ा
फातहे शहरे खैबर पे लाखों सलाम
क़ासिमे जामे कौसर पे लाखों सलाम

जो न घबराए गरदाबे आलाम में
जो ना आये कभी कुफ्र के दाम में
है खुलूस व वफा जिसके पैगाम में
दे के जाँ डाल दी रूहे इस्लाम में
करबला के बहत्तर पे लाखों सलाम
क़ासिमे जामे कौसर पे लाखों सलाम
जिसने ताजो हुकूमत को ठुकरा दिया
हाकिमे वक्त है फिर भी उनका गदा
अल्लाह अल्लाह ये मर्तबा आपका
अशरफी सिलसिला रोज़ अफजूँ हुआ
सिलसिले के मुक़द्दर पे लाखों सलाम
क़ासिमे जामे कौसर पे लाखों सलाम
अशरफियत का रोशन सितारा है तू
जिसपे नजरें ना ठहरे जो तारा है तू
दिल में करले जों वो सरापा है तू
निस्फ गौसुल वरा निस्फ ख्वाजा है तू
अशरफी तेरे पैकर पे लाखों सलाम
क़ासिमे जामे क़ौसर पे लाखों सलाम

(खाक पाये-महबूबुल उलमा इक़बाल अज़हर अशरफी)

برائے اسمار لیکر ہزار کی تعداد پوری کرنے کیلئے دس عدد الگ کر لیا جائے طاق آدمیوں کے ساتھ جو جو تہ کا نمازی ہو پڑھنا شروع کیا جائے بعد ختم اور اداں بزرگوں کے واسطے سے اپنے مقاصد و کامیابی کیلئے بدرگاہ رب العزت میں ملتجی ہوں انشاء اللہ کامیابی حاصل ہوگی۔ پانی پر دم کر کے مریض کو پلایا جائے۔

فاتحہ و۔ نذر ایصال بروح پاک سید عالم صلی اللہ علیہ بارک وسلم و تمام انبیاء کرام خلفاء راشدین عشرہ مبشرہ امہات المومنین ازواج مطہرات اہلبیت کرام خواجگان نقشبند و حضرات خواجہ معین الدین اجمیری و حضرت خواجہ بختیار کاکی و حضرت خواجہ فریدالدین گنج شکر و حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء حضرت خواجہ سراج اخی و حضرت خواجہ شاہ علاء الحق و حضرت خواجہ سلطان اوحد الدین سید اشرف جہانگیر سمنانی رحمہم اللہ اجمعین۔

درود شریف۔ ۔ سورۂ فاتحہ مع بسم اللہ ۔ سورۂ الم نشرح مع بسم اللہ
۱۰۰ بار ۷ بار ۷۹ بار

سورۂ اخلاص مع بسم اللہ ۔ سورۂ فاتحہ بسم اللہ ۔ درود شریف
۱۰۰۰ بار ۔ ۷ بار ۔ ۱۰۰ بار

یاقاضی الحاجات ۔ یاکافی المھمات ۔ یاحل المشکلات
۱۰۰ بار ۔ ۱۰۰ بار ۔ ۱۰۰ بار

یارافع الدرجات ۔ یادافع البلیات ۔ یامنزل البرکات
۱۰۰ بار ۔ ۱۰۰ بار ۔ ۱۰۰ بار

یامفتح الابواب ۔ یامُسبّب الاسباب ۔ یاشافی الامراض
۱۰۰ بار ۱۰۰ بار ۱۰۰ بار

یامجیب الدعوات ۔ یاغیاث المستغیثین اغثنی
۱۰۰ بار ۱۰۰ بار

برحمتک یاارحم الراحمین ۱۰۰ بار ۔ آمین یارب العلمین ۱۰۰ بار

درود غوثیہ ۔ ۱۱ بار ۔ آیۃ الکرسی مع بسم اللہ ۱۱ بار
سورۃ تکاثر مع بسم اللہ ۔ ۱۱ بار ۔ سورۃ کافرون مع بسم اللہ ۱۱ بار
سورۃ اخلاص مع بسم اللہ ۔ ۱۱ بار ۔ سورۃ فلق مع بسم اللہ ۱۱ بار
سورۃ ناس مع بسم اللہ ۱۱ بار ۔ سورۃ فاتحہ مع بسم اللہ ۱۱ بار
الٓمّٓ تا مفلحون مع بسم اللہ ۱۱ بار ۔ درود غوثیہ ۱۱ بار ۔ رباعی ۱۱ بار

درودِ غوثیہ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ مَنْبَعِ الْحِلْمِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

رُباعی

سید و سلطان فقر و خواجہ مخدوم و غریب ۔ بادشاہ و شیخ و درویش و ولی مولانا اید
میر صالح فاطمہ ثانی اسامی والدین — بوسعید پیر الشیاں مرد حق مردانہ اید
زینب و بی بی نصیبہ خواہران حضرت اند — این اسامی پاک را باید کہ ہر فرزانہ اید

اس کے بعد فاتحہ نذر ایصال حضور نبی کریم و تمام انبیائے کرام و اصحاب و خلفائے راشدین اہلبیت کرام بالخصوص غوث صمدانی محبوب سبحانی سیدنا عبدالقادر جیلانی قدس سرہ النورانی کے والدین انکے پیر و مرشد انکی ہمشیرہ و فرزندان خاندان صغار و کبار رحمہم اللہ اجمعین کی روح پاک کو بخشے بطفیل سیدنا غوث اعظم رضی اللہ عنہ حضور والا کے ساتھ بارگاہ رب العزت میں التجا کرے انشاء اللہ تعالیٰ خوب خوب برکتیں حاصل ہوں گی۔

طریقہ ختم خواجگان

جب کوئی مہم درپیش ہو یا منت ہو تو چاہئے کہ پہلے سفید رومال یا چادر پر سفید شیرینی و کھیر یا پیڑا ہو) پر ان بزرگوں کے نام فاتحہ دیں اور با دام اکیس دس عدد

شَیْئًا لِلّٰہِ رَجُلَ اللّٰہِ رِجَالَ اللّٰہِ الصَّالِحِیْنَ ۔

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ

عَلَیْکَ یَا خَلِیْلَ الرَّحْمٰنِ ۔

شرائط فاتحہ

چند فاتحہ بندگانِ خاصانِ خدا کے ساتھ مخصوص ہیں بغیر بجا آوری شرائط واجبی کے حصولِ مقاصد وقبولیت میں اندیشہ ہے مثلاً فاتحہ گیارہویں، ختم خواجگاں، سہ منی حضرت بوعلی شاہ قلندر، توشہ حضرت شاہ عبدالحق ردولوی رحمہم اللہ اجمعین

ترکیب فاتحہ خوانی گیارہ ربیع الثانی

بعد نماز فجر یا ظہر و بعد قرآن خوانی یا حلقۂ ذکر کے کسی بزرگ کو صدر بنائیں اور سب لوگ باوضو دور دیہ بیٹھ جائیں اور شیرینی پہلے ہی تقسیم کر دی جائے ہر ایک اپنے سامنے رکھ لے اور بعض نے شیرینی کے ساتھ تانبہ یا چاندی کے ٹکڑے بھی رکھنا فرمایا ہے جسے بعد فاتحہ غلہ میں رکھ دیا جائے علی الترتیب امیر مجلس جو جو بتلاتے جائیں، حاضرین پڑھتے جائیں۔ جسے کچھ نہ یاد ہو، صرف درود شریف پڑھتا رہے۔

بِالْاِیْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ - رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِوَالِدَیْنَا وَلِاَسْتَاذِنَا وَلِمَشَائِخِنَا وَلِاِخْوَانِنَا وَلِاَصْحَابِنَا وَلِاَحْبَابِنَا وَلِاَرْبَابِنَا وَلِجَمِیْعِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْیَاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ تَابِعْ بَیْنَنَا وَبَیْنَهُمْ فِی الْخَیْرَاتِ وَلِمَنْ حَضَرَ اِلَیْنَا وَلِمَنْ غَابَ عَنَّا وَلِمَنْ اَسَّسَ بِنَاءَ هٰذَا الْمَكَانِ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا فِی الدُّنْیَا زِیَارَةَ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَفِی الْاٰخِرَةِ لِقَاءَهٗ وَشَفَاعَتَهٗ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ٥

تکبیرِ عاشقاں (مختصر)

جو بعد ختم فاتحہ پیرانِ چشت یا قبل ذکرِ حلقہ پڑھی جاتی ہے وہ یہ ہے۔ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا صَاحِبَ الزَّمَانِ

مناجات یہ ہے۔ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَیِّدِ السَّادَاتِ وَالْعٰلَمِیْنَ شَفِیْعِ الْعُصَاةِ وَالْمُذْنِبِیْنَ مُتَمِّمِ مَکَارِمِ الْاَخْلَاقِ مُطَھِّرِ الْقُلُوْبِ عَنْ دَنَسِ الشِّرْکِ وَالنِّفَاقِ وَعَلٰی اٰلِہِ الطَّیِّبِیْنَ وَعِتْرَتِہِ الطَّاھِرِیْنَ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ اَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ اَللّٰھُمَّ اَحْیِنَا ذَاکِرِیْنَ وَاَمِتْنَا ذَاکِرِیْنَ وَاحْشُرْنَا فِیْ زُمْرَةِ الذَّاکِرِیْنَ۔ اَللّٰھُمَّ اَحْیِنَا عَاشِقِیْنَ وَاَمِتْنَا عَاشِقِیْنَ وَاحْشُرْنَا فِیْ زُمْرَةِ الْعَاشِقِیْنَ اَللّٰھُمَّ اَحْیِنَا عَارِفِیْنَ وَاَمِتْنَا عَارِفِیْنَ وَاحْشُرْنَا فِیْ زُمْرَةِ الْعَارِفِیْنَ اَللّٰھُمَّ اَحْیِنَا مِسْکِیْنًا وَاَمِتْنَا مِسْکِیْنًا وَاحْشُرْنَا فِیْ زُمْرَةِ الْمَسَاکِیْنَ۔ اَللّٰھُمَّ ثَبِّتْنَا عَلَی الْاِسْلَامِ وَالْاِیْمَانِ وَاَمِتْنَا عَلَی الْاِیْمَانِ وَاحْشُرْنَا عَلَی الْاِیْمَانِ وَلَقِّنَّا کَلِمَةَ الْاِیْمَانِ اَللّٰھُمَّ اَحْیِنَا فِیْ حَیَاةِ الْعُلَمَاءِ وَاَمِتْنَا بِمَوْتِ الشُّھَدَاءِ وَاحْشُرْنَا فِیْ زُمْرَةِ الْاَوْلِیَاءِ وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَنْبِیَاءِ اَللّٰھُمَّ اَحْیِنَا سَعِیْدًا وَاَمِتْنَا سَعِیْدًا وَاحْشُرْنَا فِیْ زُمْرَةِ السُّعَدَاءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا

لا اللہ چار سو مرتبہ اللہ چھ سو مرتبہ اور حق ھو سو مرتبہ
خوش آوازی کے ساتھ کہے، جب ایک ذکر کی تعداد پوری ہو
جائے تو سب لوگ کھڑے ہو جائیں اور دونوں ہاتھوں کو اس
طرح ملا کر جیسے ہتھوڑا ہاتھ میں لے کر رکھا جاتا ہے، ہاتھ رکھیں
اور پھر اسی طرح ہاتھ کو بلند کریں، بلند کرتے وقت لا پڑھا کر کہیں
اور جب ہاتھ کو جھٹک کر اس طرح جھکائیں جیسے ہتھوڑے کو اٹھا
کر کسی چیز پر مارتے ہیں تو الا اللہ کہیں اور پورے خشوع کے ساتھ
کہیں محمد رسول اللہ یہ تین بار کہیں۔ جب ہر ذکر کی تعداد پوری
ہو جائے تو سب لوگ آنکھیں بند کر کے دل میں مرشد کا تصور کریں
یہاں تک کہ سر حلقہ دعائے ختم پڑھے تو سب لوگ آمین کہیں اور
پھر تکبیر عاشقاں پڑھیں اور ذکر کے دوسرے طریقے اس کے
الوان و انوار کے متعلق مرشد سے زبانی تعلیم حاصل کرے

دعائے ختم ذکر

وہ دعا جو ذکر حلقہ کے بعد سر حلقہ ہاتھ اٹھا کر پڑھتا ہے اور حاضرین
آمین آمین کہتے ہیں۔ بعد ختم ہونے مناجات کے منہ پر ہاتھ پھیرے

طریقہ حلقۂ ذکر

ذاکرین میں سے کسی کو خصوصاً اس کو جو مرید ہونے میں سینئر ہے جس کو یار پیش قدم کہتے ہیں، صدر بنا کر دائرہ وار سب لوگ بیٹھ جائیں اور ہر ایک اپنے سینہ کو سرِ حلقہ کے سینہ کے مقابل رکھے، پھر چار زانو سب اس طرح بیٹھیں کہ داہنے پاؤں کے انگوٹھے اور اس کے قریب کی انگلی سے بائیں پاؤں کی رگ کیماس کو پکڑے جو گھٹنے کے نیچے ہوتی ہے اور پھر اس طرح شروع کرے کہ لا کو بائیں پاؤں کے گھٹنے سے دائیں پاؤں کے گھٹنے تک اور اِلٰہ کو دائیں پاؤں کے گھٹنے سے داہنے ہاتھ کے مونڈھے کے قریب تک لیجائے اور سانس بھر کر.......

...... لفظ اِلّا اللہ پورے زور کے ساتھ بائیں سینہ کے نیچے مارے لیکن اس وقت آخر میں آواز کو منہ بند کر کے اس طرح ختم کرے کہ آواز سینہ میں گونج جائے اور تمام ذاکرین آواز کو سرِ حلقہ کے ساتھ رکھیں لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ دو سو مرتبہ

استغفارِ ملائکہ

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ
وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللهَ (روزانہ سو بار پڑھنے والا
رزقِ وسیع پاتا ہے)

اور ہر مہینہ میں ۱۳ سیزدہم و ۱۴ چہاردہم و ۱۵ پانزدہم کو روزہ رکھے اور چھ دن عید کے اور نو دن عشرۂ اول ذوالحجہ کے روزے رکھے، اگر نہ ہو سکے تو آٹھ اور نو کے روزے ترک نہ کرے، بڑا ثواب ہے۔ اور بست و ہفتم ۲۷ ماہ رجب اور شب برأت اور عرفہ کے دن اور ہر پنجشنبہ و جمعہ کے روزے رکھے اور صحبت بد و غذائے حرام سے پرہیز کرے اور پابندیِ سنت کا ہر دم لحاظ رکھے اور اپنے مرشد سے جو کچھ وظیفہ یا ذکر و شغل پاوے اس پر عمل کرے۔ دوسروں کے کہنے پر ہرگز خیال نہ کرے۔ جاننا چاہئے کہ جو کشود کار حاصل ہوگا۔ بوسیلہ اپنے مرشد کے ہوگا۔

بَعْدَ عِلْمِكَ سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِكَ عَلٰى عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ سُبْحَانَ مَنْ لَّهٗ لُطْفٌ خَفِيٌّ فَسُبْحَانَ اللهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝

استغفارِ اولیاء

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّيْ مِنْ جَمِيْعِ مَا كَرِهَ اللهُ قَوْلًا وَّفِعْلًا سَمْعًا نَاظِرًا وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۝ (روزانہ سو بار پڑھنے والا چند سال کے بعد گناہوں سے محفوظ فرما لیا جاتا ہے)

وَلِمَنْ توالدَ وارحمهما كما ربّيانی صغیراًo

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِجَمِیْعِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْیَاءِ مِنْھُمْ وَالْاَمْوَاتِ بِرَحْمَتِکَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ o اس کے بعد، بار یہ دعا پڑھے۔

اَللّٰھُمَّ یَا رَبِّ افْعَلْ بِیْ وَبِھِمْ عَاجِلاً وَّاٰجِلاً فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ مَا اَنْتَ لَہٗ اَھْلٌ وَّلَا تَفْعَلْ بِنَا یَا مَوْلَانَا مَا نَحْنُ لَہٗ اَھْلٌ اِنَّکَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ جَوَّادٌ کَرِیْمٌ مَلِکٌ بَرٌّ رَّؤُوْفٌ رَّحِیْمٌ o اس کے بعد ۲۱ بار یَا جَبَّارُ اس کے بعد ایک بار یا تین بار سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَلِیِّ الدَّیَّانِ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْحَنَّانُ الْمَنَّانُ سُبْحَانَ اللّٰہِ الشَّدِیْدُ الْاَرْکَانِ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْمُسَبَّحُ فِیْ کُلِّ مَکَانٍ سُبْحَانَ مَنْ لَّا یَشْغَلُہٗ شَانٌ عَنْ شَانٍ سُبْحَانَ مَنْ یَّذْھَبُ بِاللَّیْلِ وَیَاْتِیْ بِالنَّھَارِ

اگر عصر کے بعد پڑھے تو یوں کہے سُبْحَانَ مَنْ یَّذْھَبُ بِالنَّھَارِ وَیَاْتِیْ بِاللَّیْلِ سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِکَ عَلٰی حِلْمِکَ

درود شریف

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی
اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی بِاَنْ تُصَلِّیَ عَلَیْهِ

پڑھا کرے

مُسَبَّعَاتِ عَشْر

اَلْحَمْدُ بالتسمیة ۷ بار ۔ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ بالتسمیة ۷ بار ۔ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ بالتسمیة ۷ بار ۔ قُلْ هُوَاللّٰهُ بالتسمیة ۷ بار ۔ قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ بالتسمیة ۷ بار ۔ اٰیۃ الکرسی بالتسمیة ۷ بار ۔ کَلِمَۂ تمجید ۷ بار اس کے بعد ایکبار یہ دعا پڑھے ۔

عَدَدَ مَا عَلِمَ اللّٰهُ وَزِنَةَ مَا عَلِمَ اللّٰهُ وَمِلْاءَ مَا عَلِمَ اللّٰهُ ۔ اس کے بعد ۷ بار یہ درود شریف پڑھے ۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِیِّكَ وَ حَبِیْبِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

اس کے بعد ۷ بار یہ دعا پڑھے ۔ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ

بعد نماز فجر قبل طلوعِ آفتاب مُسَبّعات عشر پڑھیں

یا عزیزُ یا اللہ	استغفارِ اولیاء	استغفار ملائکہ
۱۰۰ بار	۱۰۰ بار	۱۰۰ بار

بعد اشراق تلاوتِ قرآن شریف کم از کم سَو آیات کرے

بعد نماز ظہر

یا کریمُ یا اللہ

۱۰۰ بار

بعد نماز عصر

یا جبّارُ یا اللہ — ۱۰۰ بار

قبل غروبِ آفتاب مُسَبّعاتِ عشر

بعد نماز مغرب

یا ستّارُ یا اللہ	کلمۂ طیّبہ
۱۰۰ بار	۱۰۰ بار

بعد نماز عشاء

یا غفّارُ یا اللہ	سُورۂ اخلاص
۱۰۰ بار	۱۰۰۰ بار

درود شریف

۱۰۰۰ بار

اکسیرِ اعظم

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَکِیْل

روزانہ ۱۰۵ بار بعد نمازِ عشاء ننگے سر آسمان کے نیچے اوّل و آخرہ بار درودِ پاک ۴۱ دن تک بلاناغہ۔ نوچندی جمعرات سے شروع کرے ورد کے بعد پوری عجز و انکساری کے ساتھ دعا مانگے۔ کامیابی ہوگی۔

حل مشکلات، غلبۂ دشمن، حفاظت تجارت، کاروبار رزق میں برکت

وظائف و اشغال

بعد نماز پنجگانہ

قُلْ ھُوَ اللّٰہ شریف بسم اللّٰہ	آیۃ الکرسی
۱۰ بار	ایک بار

اَللّٰهُ اَکْبَر	اَلْحَمْدُ لِلّٰه	سُبْحَانَ اللّٰه	کلمۂ توحید
۳۴ بار	۳۳ بار	۳۳ بار	۱۰ بار

کلمہ تمجید - ایک بار   درود شریف - ۱۱ بار

عمل سورۂ فاتحہ

چشتی صوفیائے کرام سے منقول ہے کہ جب کوئی اہم کام درپیش ہو تو سورۂ فاتحہ کو بسم اللہ الرحمٰن الرحیم الحمد للہ رب العٰلمین بہ خوبی پڑھے (یعنی رحیم کی میم کو الحمد کے لام سے ملا کر الحمد پڑھے) ۴۱ بار پڑھے اور ہر بار آمین ۳ بار کہے۔ اسی طرح لاعلاج مرض میں مذکورہ بالا طریقے سے پڑھ کر پانی دم کر کے مریض کو پلایا جائے مجرب ہے۔

ترقی رزق وادائیگی قرض کیلئے

یَا مُسَبِّبُ الْاَسْبَاب

روزانہ ۵۰۰ بار بعد نماز عشاء ننگے سر کھڑے ہو کر آسمان کے نیچے اوّل و آخر ۵ بار درود پاک ۴۱ دن تک مسلسل بلا ناغہ ورد کے بعد بارگاہ الٰہی میں گڑگڑا کر دعائیں مانگے قضائے حاجات ترقی رزق اور ادائیگی قرض میں مجرب ہے و آزمودہ ہے۔

مختصر وظائف و اشغال

درود شریف

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَسَعْدَیْکَ ۰ اَللّٰھُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰینَا مُحَمَّدِنِ
الَّذِیْ کَانَ عَلِیًّا فِیْ دَرَجَاتِہٖ ۰ فَاطِمًا فِیْ
تَطْھِیْرَاتِہٖ حَسَنًا فِیْ صِفَاتِہٖ ۰ شَھِیْدًا
فِیْ تَجَلِّیَاتِہٖ ۰ زَیْنَ الْعَابِدِیْنَ بِعِبَادَاتِہٖ ۰ بَاقِرًا
فِیْ عِلْمِ الْاَوَّلِیْنَ ۰ وَالْاٰخِرِیْنَ ۰ بِمَعْلُوْمَاتِہٖ ۰
صَادِقًا فِیْ اَقْوَالِہٖ ۰ کَاظِمًا فِیْ جَمِیْعِ اَحْوَالِہٖ مُتَمَکِّنًا
فِیْ مَقَامِ الرِّضَا جَوَادًا کَفُّہٗ ۰ عِنْدَ الْعَطَا
ھَادِیًا اِلٰی سَبِیْلِ النَّجَاۃِ عَسْکَرِیًّا مَّعَ الْغُزَاۃِ
مَھْدِیًّا اِلٰی طَرِیْقِ الْیَقِیْنِ ۰ غِیَاثَ الْمُسْتَغِیْثِیْنَ
صَلَوَاتُ اللّٰہِ عَلَیْہِ وَعَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْنَ ۰

ابنــــه سیــد عــلاؤ الــدیــن عـلــی ابنـــه سید بـدر الـدیـن حســن
ابنـه سیـد ابـولـعبـاس احـمـد جیلانی ابنه سید عبد الغفور حسن جیلانی

ابنہ حاجی الحرمین حضرت ابو الحسن سید عبد الرزاق نور العین
سجادہ نشین الاشرفی الجیلانی و پروردہ حضرت محبوب یزدانی
ابنہ سید حسن شریف خلف اکبر سجادہ نشین ابنہ سید
محمد اشرف شہید سجادہ نشین ابنہ سید محمد سجادہ نشین
ابنہ سید ابو الفتح ابنہ سید محمد عثمان
ابنہ سید عزیز الرحمٰن ابنہ سید جمال الدین
ابنہ سید محمد غوث ابنہ سید محمد نواز سجادہ نشین
ابنہ سید تراب علی ابنہ سید قلندر بخش سجادہ
نشین ابنہ سید منصب علی سجادہ نشین ابنہ سید غلام حسین
ابنہ سید ابو الحسن ابنہ سید مقبول اشرف

ابنہ

حضرت علامہ مولانا الشاہ سید محبوب اشرف الاشرفی الجیلانی

ابنہ

جانشین حضور محبوب العلماء پیر طریقت مجاہد اسلام حضرت علامہ مولانا الحاج

الشاہ سید عالمگیر اشرف اشرفی الجیلانی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

شجرہ نسب

الٰہی بحرمت سیدِ عالم محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم
الٰہی بحرمت حضرت سیدنا علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہٗ
بروح حضرت فاطمۃ الزہرا رضی اللہ عنہا
ابنہٗ سید المکرم حسن رضی اللہ عنہ ابنہٗ سید حسن المثنیٰ
ابنہٗ سید عبد اللہ المحض ابنہٗ سید موسیٰ الجون
ابنہٗ سید عبد اللہ ابنہٗ سید موسیٰ
ابنہٗ سید داؤد ابنہٗ سید محمد
ابنہٗ سید یحییٰ زاہد ابنہٗ سید عبد اللہ جیلی
ابنہٗ سید ابی صالح موسیٰ جنگی دوست ابنہٗ شیخ محی الدین محبوب سبحانی
قطب ربانی ابو محمد سید عبد القادر جیلانی ابنہٗ سید تاج الدین ابوبکر عبد الرزاق
ابنہٗ سید عماد الدین ابو صالح نصر ابنہٗ سید ابو نصر محمد
ابنہٗ سید سیف الدین یحییٰ احمدی ابنہٗ سید شمس الدین الجیلانی

شجرہ عالیہ چشتیہ اشرفیہ منظوم

یارب بہ محمد بہر علی بہ حسن سلطان دیں مددے
بن زید و فضیل و ابراہیم و حذیفہ امین الدیں مددے
بے ممشاد و اسحٰق و احمد شاہ محمد و بو یوسف
مودود و شریف و ہم عثمان معین و قطب الدیں مددے
بہ فرید و نظام سراج و علاء بے اشرف و نور العین و ولی
بہ حسین و جعفر و ہم حاجی پے شمس الحق والدین مددے
پے راجو احمد و فتح اللہ بہ مراد و بہاؤ توکل من
بہر داؤد و دنیا زو لی پے اشرف نیک تریں مددے
از حضرت شاہ ابو احمد آں اشرفی سجادہ نشیں
پے مختار اشرف مرشد من سرکردہ حامی دیں مددے
پے اظہار و محبوب اشرف مرشد من
بہ عالمگیر اشرف مسکیں مددے

شاہ سید محمد مختار اشرف صاحب قبلہ الاشرفی الجیلانی
سجادہ نشین آستانہ عالیہ اشرفیہ سرکار کلاں کچھوچھہ شریف یوپی

الٰہی بطفیل مرشد برحق شیخ اعظم حضور
الشاہ سید محمد اظہار اشرف صاحب قبلہ
اشرفی الجیلانی کچھوچھہ مقدسہ

الٰہی بعجز و نیاز حضرت مولانا
الشاہ سید محبوب اشرف صاحب قبلہ
اشرفی الجیلانی کچھوچھہ مقدسہ

الٰہی بعجز و نیاز مجاہد اسلام حضرت علامہ مولانا الحاج الشاہ سید عالمگیر اشرف اشرفی الجیلانی

تاریخ روز ماہ سنہ ۱۴ھ
اعزار شد که داخل
شد عاقبت کار او بخیر باد
بحرمت النبی و آلہ الامجاد صلی اللہ علیہ الی یوم التناد

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سید راجو رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سید احمد رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سید فتح اللہ رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سید محمد مراد رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سید بہاء الدین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سید توکل علی رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سید داؤد علی رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت مولانا الحاج شاہ سید نیاز اشرف رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت مولانا الحاج شاہ سید ابو محمد اشرف حسین سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت اعلیٰ حضرت محبوب ربانی مولینا الحاج سید شاہ ابو احمد المدعو محمد علی حسین سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بطفیل اشرف المشائخ حضرت مولانا الحاج ابو المسعود

الٰہی بحرمت حضرت خواجہ سلطان المشائخ نظام الدین اولیاء محبوبِ الٰہی رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت خواجہ عثمان اخی سراجُ الحق وَالدین آئینۂ ہند رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت خواجہ شیخ علاء الحق والدین گنج نبات ابن سعد لاہوری خالدی رحمتہ اللہ علیہ

• الٰہی بحرمت حضرت غوثُ العالم محبوبِ یزدانی تارکُ السلطنت مخدوم سُلطان اوحدالدین میر سیّد اشرف جہانگیر سمنانی رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت خواجہ مخدوم الآفاق حاجیُ الحرمین اَبُوالحسن سیّد عبدُالرزّاق نورُالعین سجادہ نشین رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سیّد حسین قتّال سجادہ نشین خلفِ ثانی رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ سیّد جعفر عرف لاڈ رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شاہ حاجی چراغ جہاں رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سیّد شاہ محمود شمس الحق وَالدین رحمتہ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت خواجہ سلطان ابراہیم ابن ادھم رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ سدید الدین حذیفۃ المرعشی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ امین الدین ہبیرۃ البصری رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ ممشاد علو دینوری رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ اسحاق شامی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ ابو احمد ابدال چشتی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ ابو محمد چشتی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ ناصر الدین ابو یوسف چشتی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ قطب الدین مودود چشتی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ حاجی شریف زندنی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ عثمان ہارونی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ خواجگان خواجہ معین الدین چشتی اجمیری سلطان الہند غریب نواز رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ فرید الدین گنج شکر رحمتہ اللہ علیہ

لی حسنِ نیت حسنِ ایماں کر عطا — بو الحسن منکاری پیر ہدیٰ کیواسطے

قبت میری مبارک ہو میری دنیا سعید — بو سعید شہ مبارک با خدا کیواسطے

نیاث الغیاث یا غیاث العلمین — غوث اعظم بندۂ قدرت نما کیواسطے

ر حدادی کی جلوہ ریزیاں کردے عطا — شہ علی حداد میرے پیشوا کیواسطے

شدے یارب مجھے دارین کی ساری فلاح — اس علی افلح کے زہد و اتقا کیواسطے

نیہ یارب ہجوم کے برسے ترا ابرِ کرم — حضرت بو الغیث اس بحر عطا کیواسطے

ں فرما اور مردہ دلکو دیدے زندگی — ابن عیسیٰ فاضلِ حق آشنا کیواسطے

ذن برسا کے ذوقِ عبادت کی گھٹا — شہ عُبید غستی بے ریا کیواسطے

ن کو میرے جلالت کر عطا اے ذو الجلال — شہ جلال الدین بخاری گشتیا کیواسطے

نور عالم کی شرافت بخشدے مولیٰ مجھے — اشرف سمناں مرے غوث الوریٰ کیواسطے

ے رزاق میری تنگدستی دور کر — نورِ عینِ عبد الرزاق اولیا کیواسطے

ی دنیا ہو حسیں اور میرا عقبیٰ ہو حسیں — شہ حسن سردار بزم اتقیا کیواسطے

ہیں ہو عشقِ محمد لب پہ ہو حمد خدا — شہ محمد اشرف شاہِ ہدیٰ کیواسطے

سر ہو اور سودائے محمد مصطفیٰ — حضرت سید محمد اولیاء کیواسطے

حق میں مجھکو جانبازی کا جذبہ کر عطا — شاہ حسین ثانی کے صبر و رضا کیواسطے

مناجات

عالیہ قادریہ اشرفیہ

بخش دے یارب شفیع دوسرا کیواسطے — سرورِ سید محمد مصطفےٰ کیواسطے

ین و دنیا کی مری سب مشکلیں آسان کر — حضرتِ مولیٰ علی مشکلکشا کیواسطے

عطا حسنِ عمل کے ساتھ حسنِ خاتمہ — شہ حسن بصری امیر الاولیا کیواسطے

یرا سینہ ہو الٰہی اور ہو تیرا حبیب — شہ حبیب عجمی کی شانِ دلربا کیواسطے

الٰہی رنگ داؤدی میں مجھکو رنگ دے — حضرتِ داؤد طائی خوش نوا کیواسطے

الٰہی امر بالمعروف کی توفیق دے — حضرتِ معروف کرخی رہنما کیواسطے

الٰہی مجھ پہ سرِ خفی کر دے جلی — شہ سری سقطی کے کشفِ حق نما کیواسطے

یا الٰہی ہو جنودِ حق میں میرا بھی شمار — حضرتِ شیخ جُنید پارسا کیواسطے

یا الٰہی دولتِ صدق و صفا کر دے نصیب — حضرتِ بوبکر شبلی باصفا کیواسطے

ایک دیکھوں ایک جانوں ایک کا ہو کر رہوں — عبدِ واحد شہ تمیمی کی سخا کیواسطے

دین و دنیا کی عطا کر دیجئے کل نعمتیں — حضرتِ بو الفرح فرحت جانفزا کیواسطے

شجرہ عالیہ چشتیہ اشرفیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہٖ
مُحَمَّدٍ اَشْرَفِ اَنْبِیَائِہٖ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ
اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

شَجَرَۃٌ طَیِّبَۃٌ اَصْلُھَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُھَا فِی السَّمَاءِ

الٰہی بحرمت حضرت عالم فخر بنی آدم خاتم الانبیا محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم
الٰہی بحرمت حضرت علی مرتضیٰ مشکل کشا رضی اللہ تعالیٰ عنہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ حسن بصری رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ عبدالواحد بن زید رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ فضیل ابن عیاض رحمۃ اللہ علیہ

برکتوں سے بھر دے میرا کاسۂ دل اے کریم　　حضرت عبدالرسول پارسا کے واسطے

نور سے بھرپور ہو جائے مرا دل میرا سر　　شاہ نور اللہ کی نوری ضیا کے واسطے

میرا سر ہو اور سر مستی حب الٰہ　　شہ ہدایت اللہ میرے ناخدا کے واسطے

بس عنایت ہی عنایت ہو مرے اللہ کی　　شہ عنایت اللہ کی مہر و وفا کے واسطے

یا الٰہی رات دن مجھ پر رہے اشرف کا فضل　　سید اشرف صاحب جود و عطا کے واسطے

اے خدا تیری نوازش ہر گھڑی مجھ پر رہے　　شہ لوانا سس حسن صفا جود و سخا کے واسطے

یا الٰہی عمر بھر خاک در اشرف رہوں　　اس صفت اشرف کے زہد بے ریا کے واسطے

مست کر دے مست رکھ اور اپنی مستی میں اٹھا　　حضرت سید قلندر کی ولا کے واسطے

یا الٰہ العٰلمین منصب مرا کر دے بلند　　سید منصب علی کی ارتقا کے واسطے

جس طرف دیکھوں نظر آئے مجھے اشرف کا نور　　حضرت اشرف حسین اشرف نما کے واسطے

یا الٰہی حمد سے تیری کبھی غافل نہ ہوں　　شاہ بو احمد ہمارے پیشوا کے واسطے

مجھ پہ احمد کا ہو سایہ مجھ پہ اشرف کا کرم　　سیدی مختار اشرف باصفا کے واسطے

یا الٰہی بخش دے ہم سب کو تو روز جزا　　سید اظہار و محبوب اشرف کے واسطے

حضرت عالمگیر اشرف کی یہی ہے التجا
خاتمہ بالخیر ہو خیر الوریٰ کے واسطے

شجرہ قادریہ اشرفیہ منظوم

یارب بہ محمد و بہرِ علی بہ حسن سلطان دیں مدد دے

بہ حبیب و طائی و ہم کرخی بہ سری و جنید امیں مدد دے

بہ ابو بکر و عبدالواحد ہم بوالفرح و پئے ہنکاری

بہ سعید و غوث جیلانی بہ اغ علی محبوبِ دیں مدد دے

پئے وشلح و بوالغیث و فاضل آں عبید و جلال شہ سمناں

پئے نور العین و بہرِ حسن و بہ شہید گوشہ نشیں مدد دے

بہ محمد و بہرِ حسین و ولی پے عبدِ رسول و نور اللہ

بہ ہدایت و پیرِ عنایت شہ پے نذر بادی دیں مدد دے

بہ نواز و صفت بہ قلندر حق پے منصب و اشرف و بواحمد

پے مختار اشرف مرشدِ من سرکردہ حامی دیں مدد دے

پے اظہار و محبوب اشرف مرشدِ من

بہ عالمگیر اشرف مسکیں مدد دے

تاریخ　　　روز　　　ماہ　　　سنہ ۱۴ھ

اعزاز رشد

کہ داخلِ سلسلہ شدہ عاقبت کار او بخیر و باد بحرمت النبی وآلہ الامجاد صلی اللہ علیہ الی یوم التناد
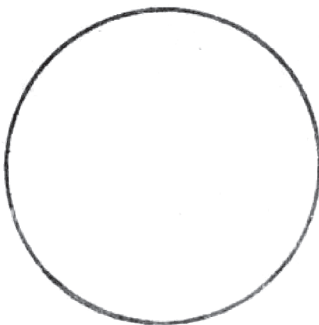
الٰہی بحرمت حضرت سید نذر اشرف سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت سید محمد نواز اشرف سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت سید صفت اشرف سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت سید قلندر بخش سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت سید شاہ منصب علی سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت مولانا الحاج شاہ ابو محمد سید محمد اشرف حسین سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ۔

الٰہی بحرمت حضرت مولانا الحاج ابو احمد المدعو سید محمد علی حسین سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ۔

الٰہی بطفیل مرشد برحق سید الشاہ محمد مختار اشرف صاحب قبلہ اشرفی الجیلانی سجادہ نشینؒ

الٰہی بطفیل مرشد برحق شیخ اعظم حضور
سید الشاہ محمد اظہار اشرف صاحب قبلہ
اشرفی الجیلانی کچھوچھہ مقدسہ

الٰہی بعجز و نیاز حضرت مولانا
سید الشاہ محبوب اشرف صاحب قبلہ
اشرفی الجیلانی کچھوچھہ مقدسہ
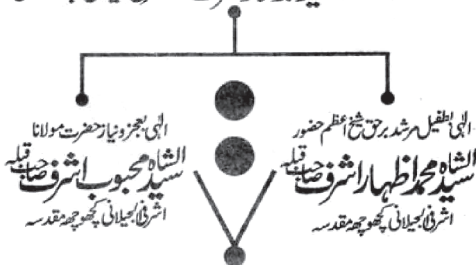
الٰہی بعجز و نیاز مجاہد اسلام حضرت علامہ مولانا الحاج سید الشاہ عالمگیر اشرف اشرفی الجیلانی

جہاں گشت رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت غوث العالم محبوب یزدانی تارک السلطنت مخدوم سلطان اوحد الدین میر سید اشرف جہانگیر سمنانی، قدس سرہٗ النورانی رحمۃ اللہ علیہ۔

الٰہی بحرمت حضرت شیخ حاجی الحرمین الشریفین ابوالحسن سید عبدالرزاق نورالعین سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سید حسن خلف اکبر سجادہ نشین اول رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سید محمد اشرف عرف شاہ شہید سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سید محمد سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سید حسین ثانی سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت عبدالرسول سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سید نور اللہ سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سید ہدایت اللہ سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت سید عنایت اللہ سجادہ نشین رحمۃ اللہ علیہ

الٰہی بحرمت حضرت شیخ سری السقطی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ جنید بغدادی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت ابو بکر شبلی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ ابو الفضل عبد الواحد تمیمی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ ابو الفرح طرطوسی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ ابو الحسن ہنکاری رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ ابو سعید مبارک مخزومی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت غوث محبوب سبحانی قطب ربانی میر ابو محمد سید
محی الدین عبد القادر جیلانی قدس سرہ النورانی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ علی حداد رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ علی افلح رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ قطب الیمن ابی الغیث بن محمد جمیل رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ فاضل ابن عیسیٰ رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ محمد عبید غیثی رحمتہ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ مخدوم سید جلال الدین بخاری جہانیاں

شجرہ عالیہ قادریہ اشرفیہ

الحمد للہ رب العلمین والصلوٰۃ والسلام علی رسولہ
محمد اشرف انبیائہ وعلی الہ واصحابہ اجمعین الی یوم الدین

بسم اللہ الرحمن الرحیم

شجرۃ طیبۃ اصلھا ثابت وفرعھا فی السماء

الٰہی بحرمت سید عالم فخر بنی آدم خاتم الانبیا محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم
الٰہی بحرمت حضرت علی مرتضیٰ مشکل کشا رضی اللہ تعالیٰ عنہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ حسن بصری رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت خواجہ حبیب عجمی رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ داؤد طائی رحمۃ اللہ علیہ
الٰہی بحرمت حضرت شیخ معروف کرخی رحمۃ اللہ علیہ

پوشیدہ نہ رکھے۔

(۱۱) مرید کو چاہئے کہ پیر جو حکم دیں خدمت و تابعداری میں دل و جان سے لگ جائے۔ بغیر اجازتِ پیر کوئی عمل نہ کرے، شغل ہو کہ مراقبہ، جب تک شیخ ان کاموں کا حکم نہ دیں۔ ارادہ نہ کرے اور دوسروں کے کہنے پر ہرگز ہرگز خیال نہ کرے۔ کیوں کہ وسیلہ کشود کار شیخ ہی ہوتا ہے۔

(۶) زیادہ تر برادرانِ طریقت کی صحبت اختیار کریں، دوسروں کی صحبت سے بچیں کہ نسبت و دلجمعی میں خلل و سستی پیدا نہ ہو۔

(۷) جب پیر کی خدمت میں حاضر ہوں تو نہایت ہی ادب و احترام کو ملحوظ رکھتے ہو حاضر ہوں، متودبانہ سلام عرض کریں۔ دست و پا بوسی اور مزاج پرسی کریں اور پھر خاموشی کے ساتھ متودب بیٹھ جائیں اور شیخ جو کچھ ارشاد فرمائیں تو بگوشِ دل ان کی گفتگو کو سنے۔ اپنی بات کرنے میں عجلت نہ کرے اور نہ بلا اجازت بات شروع کرے، چاہئے کہ بلند آواز سے گفتگو نہ کرے۔ جسے بے ادبی میں شمار کیا جاسکے اور نہ ہی اتنی پست آواز ہو کہ سماعت میں زحمت ہو۔ ان کی مجلس میں اوروں سے بھی گفتگو کرنا خواہ پست ہی آواز کیوں نہ ہو بے ادبی ہے۔

(۸) مرید کے لئے ضروری ہے کہ پیر کی عظمت و توقیر میں کوتاہی نہ برتے۔

(۹) پیر کا مزاج شناس ہونا مرید کے لئے ضروری ہے۔

(۱۰) مرید کا یہ عقیدہ ہونا چاہئے کہ پیر ہمارے تمام حالات ظاہر و باطن سے باخبر ہیں۔ اخلاص یہ ہے کہ ان سے کوئی چیز

نحمدہ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم

اَعُوذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیطٰنِ الرَّجِیم

بِسمِ اللّٰہِ الرَّحمٰنِ الرَّحِیم

وابستگانِ سلسلہ کیلئے چند ضروری نصیحتیں

۱) عقائدِ اہلسنت پر موافق سلف صالحین و بزرگانِ دین کے سختی سے پابند رہیں۔

۲) سُنّت و شریعت کی پابندی اور صحبتِ بد و غذائے حرام سے پرہیز کرتے رہیں۔

۳) نمازِ پنجگانہ پابندیِ وقت کے ساتھ ادا کرتے رہیں، ہرگز ترک نہ ہونے دیں۔

۴) آپس میں میل جول، الفت و محبّت برقرار رکھیں، تفرق پیدا نہ ہونے دیں۔

۵) لغو اور فضول باتوں سے پرہیز کرکے دنیا و آخرت کی آفتوں سے بچنے کی کوشش کریں۔

حضرت شاہ علاء الحق پنڈوی کی خانقاہ میں قیام۔

شیراز ہند جونپور میں پہلی بار آمد سنہ ۷۳۲ھ کا تعلق دورِ حکومت میں (عرب و یورپ) ممالک اسلامیہ کی طویل سیاحت سنہ ۸۲۳ھ تا سنہ ۸۳۸ھ مسلسل ۱۵ سال سیر و فی الارض کی بجا آوری فرمائی اسی دوران مصر، عراق، فلسطین ایران، ترکستان، جزیرۃ العرب اور روم وغیرہ کی سیاحت فرمائی۔

قیام پنڈوہ شریف سنہ ۷۵۹ھ تا سنہ ۷۶۳ھ مدت قیام ۴ سال۔

جانشین کا انتخاب سنہ ۷۶۴ھ میں حرمین شریفین کی زیارت کے بعد حضرت اپنی خالہ زاد بہن کی ملاقات کے لئے ایران تشریف لے گئے۔ اور اپنے بھانجے حضرت عبدالرزاق کو اپنا نور العین جانشین بنانے کے بعد فرزندی میں قبول کرکے ہمراہ لائے۔

بلادِ اسلامیہ و شرقیہ کی دوسری بار سیاحت سنہ ۷۶۵ھ میں فرمائی

منصبِ غوثیت پر فائز ہوئے: سنہ ۷۷۰ھ میں۔

محبوبِ یزدانی کا خطاب سنہ ۷۸۲ھ میں روح آباد کچھوچھہ شریف میں۔

مخدوم سلطان سید اشرف جہانگیر سمنانی کی سو سالہ حیات طیبہ پر ایک نظر

ولادت: ۔ سنہ جو شہر سمنان جو ایران کے دارالسلطنت تہران سے ۲۴۰ کلو میٹر دور مشہد روڈ پر واقع ہے اور آج بھی ایران کا زرخیز صوبہ ہے ۔

والدین: ۔ والد سلطان سید ابراہیم شاہ سمنانی

والدہ: ۔ سیدہ خدیجہ جو حضرت خواجہ احمد یسوی کی اولاد تھیں

تکمیل علوم معقولات و منقولات سنہ ۷۲۲ھ میں ۱۴ سال کی عمر میں

تخت نشینی: بحکومت نوربخشیہ سمنان پر جلوس فرمایا سنہ ۷۲۳ھ ترک سلطنت سنہ ۷۳۳ھ کل دس سال تخت شاہی پر جلوہ آرا رہے ۔

بیعت و خلافت: ۔ سنہ ۷۳۵ھ سمنان سے پنڈوہ شریف بنگال (ہند) کا فاصلہ ۲ سال میں طے فرمایا ۔

قیام پنڈوہ شریف: ۔ سنہ ۷۳۵ھ تا سنہ ۷۴۱ھ پیر و مرشد

جو ٹکرائے گا ان سے وہ یزیدی ٹوٹ جائیگا
وہ اہلبیت کی چٹان عالمگیر اشرف ہیں

ہمارے راستے ہیں آنا تو کچھ سوچ کر آنا
ہمارا دل ہماری جان عالمگیر اشرف ہیں

امیروں کو یہاں ہم نے غلامی کرتے دیکھا ہے
ہر اک دھنوان کے دھنوان عالمگیر اشرف ہیں

ولایت کی حسیں خوشبو جہاں سے روز آتی ہے
علی کے گھر کے وہ گلدان عالمگیر اشرف ہیں

جو اہلبیت کے باغی ہیں اے اختر زمانے میں
انہی کے موت کا فرمان علمگیر اشرف ہیں

شہ سمنان کی پہچان علمگیر اشرف ہیں
یقیناً اس زمین کی شان عالمگیر اشرف ہیں

اٹھ کر دیکھ لو تاریخ کے اوراق کہتے ہیں
کہ غوث پاک کی سنتان عالمگیر اشرف ہیں

ہزاروں لاکھوں مل کر بھی دبا سکتے نہیں جنکو
وہی اٹھتے ہوئے طوفان عالمگیر اشرف ہیں

عقیدت سے چلو دامن بھریں امید کا اپنے
مرے مخدوم کا فیضان عالمگیر اشرف ہیں

غلام اشرفِ سمناں ہوں میں مشر کا ڈر کیسا
شفاعت کا مری سامان عالمگیر اشرف ہیں

عطائے اشرفِ سمناں عطا کرتے ہے ہم سب کو

ہے اندازِ کریمانہ مرے محبوب اشرف کا

چراغِ معرفت کی لو ہے یا روئے منور ہے

جسے دیکھو ہے پروانہ مرے محبوب اشرف کا

اٹھانے لگ گئے ہیں لوگ انگلی حال اختر پر

ہو ہے جب سے دیوانہ مرے محبوب اشرف کا

پیا ہے جس نے پیمانہ مرے محبوب اشرف کا
اسے کہتے ہیں مستانہ مرے محبوب کا

چھلکتا ہے جہاں ساغر مئے جب شہ دیں کا
وہ میخانہ ہے میخانہ مرے محبوب اشرف کا

حسینوں مہ جبینوں کو وہ خاطر میں نہیں لاتا
ہے جس کہ دل میں کاشانہ مرے محبوب اشرف کا

اسے فرزانگی حاصل ہے داناؤں کی محفل میں
بظاہر ہے جو دیوانہ مرے محبوب اشرف کا

سرورا شاہا کریمہ دستگیرا اشرفا حرمتِ روحِ پیمبر یک نظر کن سوئے ما

اے جہانگیر پیرا اے مخدوم
نہ رود از درت کے محروم
بہر اولاد خویش اے اشرف
حاکم وقت را بکن محکوم

زیرِ ہدایت

نبیرہ سید الشہداء شہزادہ مخدوم سمناں جانشین حضور محبوبِ العلماء پیرِ طریقت
مجاہدِ اسلام حضرت علامہ مولانا الحاج
الشاہ سید عالمگیر اشرف اشرفی الجیلانی
سجادہ نشین آستانہ حضور محبوب العلماء
کچھوچھہ مقدسہ ضلع امبیڈکر نگر

توکل کامپلکس، نزد ولمن ہال، سدھار تھ نگر، ٹیکہ، ناگپور ۱۷

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

شجرۃ طیبۃ اصلھا ثابت وفرعھا فی السماء

عالیہ

قادریہ شجرہ چشتیہ

اشرفیہ
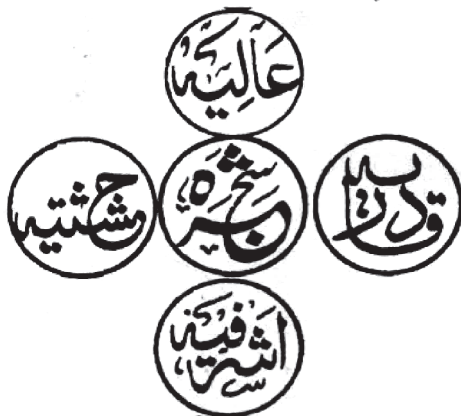
ناشر محبوب العلماء اکیڈمی ناگپور

ASHRAF PRESS :
Yashodhra Nagar, Ngp, M.S. : 9373005111

आस्तान ए अक़दस
हुज़ूर महेबूबुल ओलमा
हज़रत सैय्यद महेबूब अशरफ़
अशरफ़ी उल जिलानी अलैहिर्रहमां, किछौछा मुकद्दसा
जिला अम्बेडकर नगर, उत्तरप्रदेश

شَجَرَةٌ طَيِّبَةٌ اَصلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِی السَّمَاء
شجرۂ عالیہ
قادریہ
چشتیہ
اشرفیہ
خاکپائے اشرف
مجاہدِ اسلام حضرت علّامہ مولانا الحاج
الشّاہ سیّد عالمگیر اشرف اشرفی الجیلانی
سجّادہ نشین آستانۂ حضور محبوب العلماء کچھوچھہ مقدسہ وچئیر مین محبوب العلماء اکیڈمی وانٹرنیشنل سُنّی سنٹر
اینٹا بھٹّا چوک، حضرت نظام الدین کالونی کلمنا رینگ روڈ ناگپور ۲۶ (مہاراشٹر)
SUNNI CENTRE NAGPUR
Mahboobul Ulama Academy
शायकर्दा
महबूबुल उलमा एकेडमी नागपुर